UNIVERSAL LIBRARY
OU_180976
UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H82 P92P

Accession No. P. G. H791

Author प्रेमचन्द.

Title प्रेम की वेदी. 1947.

This book should be returned on or before the date last marked below.

प्रेम की वेदी

लेखक

प्रेमचन्द

सरस्वती प्रेस बनारस

चतुर्थ संस्करण ; अक्टूबर, १९४७
मूल्य ।।।)

मुद्रक—आपतराय, सरस्वती प्रेस, बनारस

पहला दृश्य

(एक बँगलानुमा मकान, सामने बरामदा है, जिसमें ईंटों के गोल खंबे हैं। बरांडे में दो-तीन मोढ़े बेढंगेपन के साथ रखे हुए हैं। बरामदे के पीछे तीन दरवाज़ों का एक कमरा है। कमरे के दोनों तरफ़ दो कोठरियाँ हैं। कमरे में दरी का फ़र्श है जो कई जगह फटा हुआ है। बीच में एक गोल मेज है, जिस पर मेज़-पोश पड़ा हुआ है और एक गुलदस्ता रखा हुआ है, जिसके फूल सूख गये हैं। पाँच बेंत की कुरसियाँ हैं, जिन पर गद्दी पड़ी हुई है, पर मैली और फटी हुई है। दीवारों पर कई ईसाई-धर्म विषय के पुराने चित्र हैं, जिन पर गर्द पड़ी हुई है। एक तरफ एक कैलेंडर है और एक तरफ़ एक बड़ा शीशा। दाहिनी तरफ़वाली कोठरी में दो कोच हैं, बेत के ; मगर टूटे हुए। बाईं तरफ़वाली कोठरी में एक कुरसी और प्यानो है। कमरे के पीछेवाली दीवार में एक दरवाज़ा है, जो अन्दर जाता है। भीतर एक छोटा-सा आँगन है। आँगन में पानी का नल और मुर्गियों का दरबा है। एक कोने में बावर्चीखाना है। दूसरी तरफ गुसलखाना है। सभी दरवाज़ों पर मैले परदे पड़े हुए हैं।

मिस जेनी बाईं तरफ़वाली कोठरी में प्यानो पर बैठी गा रही है। उसकी उम्र १८-२० साल की होगी, साँवला रंग, बड़ी-बड़ी आँखें, हलके गुलाबी रंग की साड़ी पारसी फैशन से पहने हुए। रहन-सहन से ऐसा मालूम होता है कि औसत दरजे का ईसाई परिवार है। फर्नीचर, फ़र्श सब कुछ उसी तरह का है, जैसा गुदड़ी बाजार में मिला करता है।

मिस जेनी गाती है—कभी हमसे-तुमसे भी प्यार था, तुम्हें याद हो कि न याद हो।

मिसेज़ गार्डन अन्दर से आँखें मलती आती है। वह अधेड़ स्त्री है, गोरी, सिर के बाल खिचड़ी, मुख से चिन्ता झलक रही है। वह स्कर्ट पहने हुए है। स्कट मैला हो गया है, उसके दुर्बल शरीर पर खिलता नहीं।)

मिसेज गार्डन—आज विलियम आता होगा। तू अभी तक यूँ ही बैठी हुई है?

जेनी—तो क्या करूँ, नाचूँ या ढोल बजाऊँ?

मिसेज गार्डन—इसी तरह मेहमानों का स्वागत किया जाता है! अभी तक न मुँह धोया, न कुछ मेक-अप किया।

जेनी—मैंने कह दिया, मेरी तबीयत उनसे नहीं मिलती। आप बर-बस उनके पीछे पड़ी हुई हैं।

मिसेज गार्डन—तुम तो बेटी, कभी-कभी ऐसी बातें करने लगती हो, जैसे घर का हाल कुछ जानती ही न हो। विलियम में क्या बुराई है, जरा सुनूँ? या यह भी कोई जिद है कि मेरी तबीयत उससे नहीं मिलती। अच्छा खासाजवान है, शक्ल-सूरत भी बुरी नहीं, बड़ा ही हँस-मुख, बड़ा नेक चलन, बड़ा चरित्रवान्, न शराब से मतलब, न किसी और शौक से, और तुझे कैसा आदमी चाहिए? चार पैसे कमाता है, घर में भी कुछ जायदाद है; और आदमी में क्या चाहिए। फैशनेबल नहीं है, यही ऐब है। मगर तू इसे ऐब समझ, हुनर तो मैं समझती हूँ, बूढ़ी न होती, तो उससे जरूर शादी कर लेती। तुम्हारे पापा को गुजरे आज पाँचवा साल है। हाथ में जो कुछ था, वह सब निकल गया। अब काम कैसे चले? माना कि अब तू ग्रेजुएट हो गई; लेकिन ऐसी कौन-सी बड़ी नौकरी तुझे मिली जाती है। ज्यादा-से-ज्यादा सौ की। तेरे पापा पाँच सौ लाते थे, तब गुजर होता था, और चार पैसे हाथ में रह गये। विलियम की आमदनी

चार-पाँच सौ से कम नहीं है। फिर यह अच्छा भी तो नहीं लगता कि औरत अपनी गुजर-बसर के लिए नौकरी करे। मैं इसे पसन्द नहीं करती। मुझे सौ रुपये की जगह मिलती थी ; लेकिन तेरे पापा कभी राजी न हुए।

जेनी—मैं तो आपसे कह चुकी, मैं शादी नहीं करना चाहती।

मिसेज गार्डन—आखिर क्यों, वही तो पूछती हूँ !

जेनी—इसलिए कि मैं किसी मर्द की गुलामी पसन्द नहीं करती।

मिसेज गार्डन—शादी करना गुलामी है ! वे सभी औरतें जो शादी करती हैं, गुलाम हैं ?

जेनी—गुलाम नहीं तो और क्या हैं ! रानियाँ हैं, वह भी गुलाम हैं। मजदूरिनें हैं, वह भी गुलाम हैं। मर्द की दुनिया वह है, जहाँ नाम है, धन है, सम्मान है। स्त्री की दुनिया वह, जहाँ पिसना और घुलना और कुढ़ना है। हर काम में औरत को मर्द की जवाबदेही करनी पड़ती है। अगर उसने चार पैसे ज्यादा खर्च कर दिये, तो मर्द की त्योंरियाँ चढ़ गईं। मर्द के नाश्ते में जरा देर हो गई, तो औरत के सिर आफत आ गई। अगर वह बगैर मर्द से पूछे कहीं चली गई, तो मर्द उसके खून का प्यासा हो गया। अगर किसी मर्द से हँसकर बोली, तो फिर समझ लो कि उसकी कुशल नहीं। दिखाने को तो मर्द स्त्री की बड़ी इज्जत करता है, मोटर पर अच्छी जगह स्त्री की है, सलाम पहले मर्द करता है, स्त्री का ओवरकोट पुरुष सँभालता है, स्त्री का हाथ पकड़कर गाड़ी से उतारता है, पहले स्त्री को बिठाकर आप बैठता है ; लेकिन यह सब दिखावे का शिष्टाचार है। पुरुष दिल में खूब समझता है कि उसने स्त्री की वह चीज छीन ली जिसकी पूर्ति में वह जितनी खातिरदारी करे, वह थोड़ी है। वह चीज स्त्री की आजादी है।

मिसेज गार्डन—तेरे विचार बड़े विचित्र हैं जेनी !

जेनी—विचित्र नहीं, यथार्थ हैं। हम अपने टामी की कितनी खातिर करते हैं। उसे ताँगे पर साथ बैठाते हैं, गोद में उठाते हैं, उसका मुँह

चूमते हैं, गले से लगाते हैं, उसे साबुन से नहलाते हैं ; लेकिन क्या बराबर हमारे मन में यह भाव नहीं रहता कि यह हमारा कुत्ता है। उसने जरा भी कोई काम हमारी इच्छा के विरुद्ध किया और हमने उसपर हंटर जमाया। पुरुष विवाह करके स्त्री का स्वामी हो जाता है। स्त्री विवाह करके पुरुष की लौंढ़ी हो जाती है। अगर वह पुरुष की खुशामद करती रहे, उसके इशारों पर नाचती रहे, तो उसके लिए रुपये हैं, गहने हैं, रेशमी कपड़े हैं, उसपर जान छिड़की जाती है, हृदय न्योछावर किया जाता है ; लेकिन स्त्री ने जरा भी स्वेच्छा का परिचय दिया, जरा भी आत्म-सम्मान प्रकट किया, फिर वह त्याज्य है, कुलटा है। पुरुष उसे क्षमा नहीं कर सकता। पुरुष कितना दुराचारी ही हो, स्त्री जबान नहीं हिला सकती। उसका धर्म है, पुरुष को अपना खुदा समझे। मैं यह नहीं बरदाश्त कर सकती।

मिसेज गार्डन – मैं मानती हूँ, तेरी बातों में बहुत कुछ सच्चाई है ; लेकिन गुजारे की तो कोई फिक्र करनी ही पड़ेगी।

जेनी—तो क्या तुम समझती हो, मैं निश्चिन्त हूँ ; पर यह न समझना, मैं सौ-पचास की टीचरी करके लड़कियों को ग्रामर न रटाऊँगी। अगर तकदीर ने मदद की, तो मैं दिखा दूँगी कि मैं कितना कमा सकती हूँ ; विलियम कभी उसका स्वप्न भी नहीं देख सकता।

(मिस उमा आती हैं। बड़ी रूपवती। माँग का सिन्दूर और भाल-तिलक बतला रहा है कि वह विवाहिता हैं। उनकी गोल कलाई पर जड़ाऊ कंगन है, गले में जड़ाऊ हार, मूल्यवान बनारसी साड़ी पहने हुए, बहुत प्रसन्न-वदन, मानों संसार में वसन्त-ही-वसन्त, फूल-ही-फूल हैं !)

जेनी—(कुरसी पर बैठे-बैठे) मैं पहले कुरसी से उठकर तुम्हारा

सत्कार करती थी ; लेकिन आज न उठूँगी। इसलिए कि तुम मेरी निगाह में वह नहीं रहीं जो पहले थीं।

उमा—क्यों ! क्या मैं कुछ और हो गई हूँ ?

जेनी—बेशक, पहले तुम स्वतन्त्र कुमारी थीं। अब तुम एक पुरुष की दासी हो।

उमा—(मुसकिराकर) लेकिन तुम्हारी सहेली तो हूँ। तुम्हारे साथ पढ़ी तो हूँ, तुम्हारे साथ खेली तो हूँ। यदि मैं अपने पद से गिर गई हूँ, तब तो तुम्हें मेरा सत्कार करना चाहिए जिसमें मुझे दुःख न हो।

जेनी—अगर तुम्हारे ऊपर कोई विपत्ति आ गई होती—ईश्वर न करे—तो मैं तुम्हारे पैरों-तले आँखें बिछाती ; लेकिन तुमने जान-बूझकर अपने पैरों में बेड़ियाँ डाली हैं, अपनी स्वाधीनता को, अपनी आत्मा को, सोने और रेशम पर बेचा है।

उमा—(हँसकर) अच्छा ईमान से कहना, मैं पहले से ज्यादा खूब-सूरत नहीं मालूम हो रही हूँ ?

जेनी—अपने स्वामी की आँखों में मालूम होती होगी। मेरी आँखों में तो तुम्हारा रूप-लावण्य इस सोने और रेशम के नीचे दबा-सा मालूम होता है।

उमा—देखो यह कंगन, कितना बारीक काम है ?

जेनी—(मुँह फेरकर) गुलामी की हथकड़ी है।

उमा—यह हार देखो, हीरे जड़े हैं।

जेनी—गुलामी का तौक है !

उमा—(कुछ चिढ़कर) जिसे तुम गुलामी की हथकड़ी और गुलामी का तौक कहती हो, उसे मैं व्रत और कर्तव्य और आत्म-समर्पण का चिह्न समझती हूँ।

जेनी—यह व्रत, वह कर्तव्य और वह आत्म-समर्पण एक तरफी क्यों है। तुम्हारे ही लिए क्यों इन चिह्नों की जरूरत है ! तुम्हारे पति के लिए

क्यों जरूरी नहीं ? जहाँ तक मेरा अनुभव है, उसके हाथों में न चूड़ियाँ हैं न कंगन है, न गले में हार है, न माथे पर सिंदूर का टीका है। यह क्यों ? तुम्हें अपने व्रत पर स्थिर रखने के लिए बन्धन चाहिए, उसे बन्धन की जरूरत नहीं ?

(उमा निरुत्तर हो जाती है और उपालंभ की दृष्टि से मिसेज गार्डन की ओर देखती है।)

उमा—सुनती हैं मामा आप इनकी बातें !

मिसेज गार्डन—मैं इसे कुबुद्धि कहती हूँ। निरी मूर्खता।

जेनी—(विजय-भाव से) जवाब दो न। क्यों तुम्हारे पति ने इन बन्धनों को स्वीकार नहीं किया ? क्यों तुम्हारे लिए इन बन्धनों को लाजिम समझा गया ? कर्तव्य और प्रेम उसके लिए भी उतना ही आवश्यक है, जितना तुम्हारे लिए। तुम्हें अपने कर्तव्य की याद दिलाते रहने के लिए निशानियों की जरूरत है, उसे क्यों नहीं ? इसका कारण इसके सिवा और क्या हो सकता है, कि तुम गुलाम हो, वह आजाद है।

उमा—(एक जवाब सूझता है) पुरुष अपने कर्तव्य की ओर से आँखें बन्द कर ले, तो क्या स्त्री भी बन्द कर ले ? अगर पुरुष अपने व्रत का पालन न करे, अपनी आत्मा को भूल जाय, तो क्या स्त्री भी भूल जाय ? मेरा विचार है, कि स्त्री परिवार का मुख्य अंग है ; इसलिए उसे बन्धनों की ज्यादा जरूरत है। उसी तरह जैसे शूद्रों के लिए किसी निशानी की जरूरत नहीं ; पर द्विजों के लिए यज्ञोपवीत अनिवार्य है !

जेनी—लचर दलील है। असली बात यह है कि आदि में स्त्री पुरुष की सम्पत्ति समझी जाती थी, उसी तरह जैसे पशु, अनाज या घर। जैसे आज जायदाद पर डाके पड़ते हैं, चोरियाँ होती हैं, उसी तरह उस समय भी होता था। लड़की बहुधा सबसे बहुमूल्य सम्पत्ति समझी जाती थी। इसलिए ज्यों ही वह सयानी हो जाती थी, उस पर डाके पड़ने लगते थे। पुरुष अपने सूरमाओं को लेकर अस्त्र-सस्त्र के साथ, लड़की के ऊपर छापा

मारता था। दोनों दलों में खूब लड़ाई होती थी, खूब रक्तपात होता था। लुटेरे विजय पाते, तो लकड़ी को ले भागते और उसके साथ घर में जो चल सम्पत्ति मिल जाती, उसे भी उठा ले जाते। लड़कीवाले रो-पीटकर रह जाते थे। कन्या विजेताओं के घर में कैद कर दी जाती थी। उसके हाथों में हथकड़ियाँ डाल दी जाती थीं, पैरों में बेड़ियाँ, गले में तौक और उस संग्राम के स्मृति स्वरूप उसके माथे पर रक्त का टीका लगा दिया जाता होगा, जिसमें कन्या समझती रहे कि यदि उसने कभी भागने का प्रयत्न किया, तो उसकी भी वही दशा होगी जो उसके घरवालों की हुई है। कन्या को कभी घरवालों की याद न आये, वह इन नये स्वामियों को ही अपना सर्वस्व समझने लगे, इसलिए कन्या को उपदेश दिया जाता था कि पति ही तेरा स्वामी है, तेरा देवता है, उसे प्रसन्न रखकर ही तू स्वर्ग में जायगी। यह है इन निशानियों का तथ्य। आज उन पाशविक प्रथाओं का रूप कुछ बदल गया है अवश्य; किन्तु मूलाधार वही है। नई संस्कृति ने कुछ लेस-थोप की है; लेकिन पुरुषों की मनोवृत्ति अब भी वही है और समाज-संस्था का आधार भी वही है। बिलकुल वही।

मिसेज गार्डन– यह तुम्हारे मस्तिष्क की उपज है; या तुमने कहीं पढ़ा है?

जेनी—यह एक बड़े फ्रांसीसी तत्त्ववेत्ता के विचार हैं।

मिसेज गार्डन—तो उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई होगी। स्त्री-पुरुष दोनों अपनी रुचि के अनुसार अपना अपना बनाव-सिङ्गार करते हैं। स्त्री पुरुष को आकर्षित करना चाहती है, पुरुष स्त्री को। पुरुष में पशुबल अधिक है, स्त्री में बुद्धिबल अधिक है; इसलिए बाहर की कड़ी मेहनत-मजदूरी, लड़ाई-दंगा मर्द के हिस्से पड़ा, भीतर का काम औरत के हिस्से आया। मैंने तो बड़े-बड़े राजाओं को हीरों के हार और मोतियों के कंगन पहने देखा है। फिर देस-देस का रिवाज अलग-अलग है। मजदूर औरतें भी बहुत कम गहने पहनती हैं। योरप में साधारणतः स्त्रियाँ गहने पहनती ही नहीं हैं।

केवल ऊँचे कुलवाली महिलाएँ दो-एक चीज पहन लेती हैं। भारत में पोर-पोर गहनों से लदा होता है। अपने-अपने देस की प्रथा है।

जेनी—आप इसे स्वीकार नहीं करतीं कि पुरुष स्त्री पर शासन करता है?

मिसेज गार्डन—नहीं। अगर ऐसे पुरुष हैं, जो स्त्री पर शासन करते हैं, तो ऐसी स्त्रियाँ भी हैं, जो पुरुष पर शासन करती हैं। मैं खुद तुम्हारे पापा पर शासन करती थी। वह मुझसे पूछे बिना किसी से मिलने भी न जाते थे। उन्हें लौटने में एक मिनिट की भी देर हो जाती थी, तो मैं उनकी बुरी तरह खबर लेती थी। यह मैं मान लूँगी कि पुरुष में यह प्रवृत्ति अधिक होती है; लेकिन इसका कारण यही है कि पुरुष ने पशुबल के साथ बुद्धिबल में भी उन्नति की, हमने आलस्य और विलास मे पड़कर हर तरह से अपनी मिट्टी खराब कर ली। समाज की यह जो वर्तमान अधोगति है, इसकी जिम्मेदारी स्त्री-पुरुष दोनों ही पर आती है। केवल पुरुषों को इल-जाम देना अन्याय है।

जेनी—यह तो आप मानेंगी ही कि ९९ फी सदी पुरुष व्यभिचारी होते हैं। ऐसा कोई बिरला ही पुरुष संसार में होगा, जिसने पर-स्त्री पर निगाह न डाली हो।

मिसेज गार्डन—अगर ऐसे दगाबाज मर्द हैं, तो ऐसी दगाबाज औरतें भी कम नहीं हैं। हो सकता है, मरदों की संख्या अधिक हो; लेकिन इसका कारण यह नहीं है कि औरत स्वभावतः विदुषी होती है; बल्कि उसे प्रकृति ने जकड़ रखा है। मैं तो मोटी बात यह जानती हूँ कि जो स्त्री-पुरुष सुख-शांति से जिन्दगी बसर करना चाहते हैं, वह जानते हैं कि पूर्ण विश्वास और प्रेम से ही यह सिद्धि हाथ आ सकती है। जो स्त्री-पुरुष वासना तृप्ति के उपासक हैं, वह दोनों रोकर और झींककर जिन्दगी के दिन काटते हैं।

जेनी—आप तो मामा आज मरदों की वकालत करने पर तुली हुई हैं। आपका यही निर्णय है कि पुरुष स्त्री को अपने बराबर समझता है और उस पर किसी तरह का दबाव नहीं डालता?

मिसेज गार्डन—हाँ, जो पुरुष जीवन का सच्चा अर्थ समझता है, उसका यही व्यवहार होता है। सुशिक्षित जोड़ों में इसका विचार ही नहीं आने पाता कि कौन छोटा है, कौन बड़ा। स्त्री से कोई भूल हुई, पुरुष ने डाटा। पुरुष से कोई गलती हुई, स्त्री ने गरदन नापी। दोनों हर हालत में संतुष्ट रहते हैं। मैं यह नहीं कहती कि ऐसा पुरुष सच्चा साधु हो जाता है और उसका मन किसी स्त्री पर चंचल नहीं होता, अथवा हरेक विवाहिता स्त्री देवी होती है ; लेकिन उन्हें अपने ऊपर निग्रह करना होता है, और कभी-कभी गुप्त प्रेम की आँच में जलकर मर जाना होता है। यदि मुझे अपने पति से अधिक रूपवान् पुरुष को देखकर दिल पर हाथ रखने का अधिकार है, तो मेरे पति को भी मुझसे अधिक रूपवती स्त्री को देखकर यह अधिकार समान रूप से प्राप्त है ; लेकिन हम दोनों समझते हैं कि इस विश्वासघात से हमारे सुख-शांति में बाधा पड़ेगी। इसलिए जब्त करते हैं। कुलीन और विचारशील स्त्री-पुरुषों मे तो यह भावना आने ही नहीं पाती।

उमा—(प्रसन्न होकर) अब कही जेनी, मामा ने तुम्हारी जबान बन्द कर दी या नहीं ?

जेनी—वाह ! इन पुराने विचारों से मेरी जबान बन्द हो जाती, तो अब तक मेरी शादी विलियम से हो गई होती। मेरा तो विचार है, जिन स्त्रियों में कोई व्यक्तित्व नहीं है, कोई उत्साह नहीं है, कोई आदर्श नहीं है, उन्हें विवाह कर लेना चाहिए ; लेकिन जिनमें अपने विचार हैं, अपना व्यक्तित्व है, अपनी इच्छा है, जिन्हें कीर्ति और ख्याति की लालसा है, उन्हें अविवाहित रहना चाहिए। अपनी हस्ती को पति की हस्ती में डुबा देना, इतना बड़ा लाभ है, जो मैं नहीं कर सकती।

(मोटर का हार्न सुनाई देता है।)

उमा—लो, वह महाशय आ पहुँचे। इनके मारे घर से निकलना मुश्किल है।

(मोटर द्वार पर आकर रुकती है और उमा का पति योगराज उतरकर अन्दर आता है। उमा दोनों महिलाओं का अपने पति से परिचय कराती है।)

योगराज—तुमने मुझसे क्यों न कहा, मिस गार्डन के पास जा रही हूँ। मैं भी तुम्हारे साथ आता !

उमा—तुमने भी तो अपने मित्रों से मेरा परिचय नहीं कराया। मैं क्यों कराती !

योगराज—मेरे मित्रों में शायद ही कोई ऐसा हो, जो तुम्हें देखकर मेरा शत्रु न हो जाता। मेरे विचार में तुम्हें अपनी सहेलियों से यह शिकायत न होगी।

उमा—आप अपने मित्रों की जिस चंचलता से डरते हैं, क्या आप उससे मुस्तसना हैं !

योगराज—था तो नहीं ; लेकिन तुमने कर दिया। (मुसकिराता है)

उमा—मेरी यह बहन कहती हैं, स्त्री विवाह करके पुरुष की गुलाम हो जाती है। क्या तुम मुझे अपना गुलाम समझते हो !

जेनी—(झेंपकर) यह इस बहस का अवसर नहीं है उमा, आप हमारे मेहमान हैं। हमें आपका कुछ स्वागत करने दो। आपके लिए चाय बनाऊँ !

(यह योगराज को सिर से पाँव तक अनुरक्त नेत्रों से देखकर आँखें झुका लेती है।)

योगराज—जी नहीं, मैं चाय पी चुका हूँ, आप कष्ट न करें।

जेनी—उमा शायद डर रही है, कि मैं चाय में कोई जादू कर दूँगी।

योगराज—मैं तो चाहता हूँ, आप मुझ पर जादू करें, उमा ने मुझ पर जो वशीकरन डाल रखा है, उससे जरा छुटकारा तो मिले।

जेनी—आप हैं बड़े भाग्यवान कि उमा जैसी स्त्री पाई।

योगराज—मैंने उस जन्म में कोई बड़ी तपस्या की थी।

उमा—तुम दोनों मिलकर मुझे बनाओगे तो मैं चली जाऊँगी।

जेनी की आँखें फिर योगराज से मिलती हैं। वह आँखें झुका लेता है। उमा जेनी को तीव्र नेत्रों से देखती है।)

योगराज—(प्यानो देखकर) अच्छा, आपको प्यानो का भी शौक है! फिर तो मेरा जी चाहता है, यहाँ कुछ देर बैठकर संगीत का आनन्द उठाऊँ। क्यों मिस गार्डन, आप हमें निराश तो न करेंगी!

जेनी—आप तो तकल्लुफ की बातें करते हैं बाबूजी, आइए जो कुछ कहिए सुनाऊँ।

(दोनों प्यानोवाली कोठरी में जाते हैं।)

उमा—(अधीर होकर) भाई गाना-वाना सुनाने लगोगी, तो देर होगी। मैंने अम्माँ से कहा भी नहीं और चली आई। वह मुझ पर नाराज होने लगेंगी।

जेनी—(मुसकिराकर) तो तुम जाओ न। बाबूजी मेरी एक चीज सुनकर जायँगे।

उमा—(खिसियाकर) मुझे ड्राइव करना नहीं आता।

जेनी—तो जरी देर बैठ जाओ ना, अम्माँ मार न डालेंगी।

योगराज—नहीं मिस गार्डन, इस वक्त क्षमा कीजिए। यह दोष मुझ पर आ जायगा। फिर कभी।

(वह जेनी और मिसेज गार्डन से हाथ मिलाता है। उमा भी दोनों से हाथ मिलाती है।)

जेनी—कल आना उमा, और बाबूजी को लाना।

(उमा कोई जवाब नहीं देती। दोनों चले जाते हैं।)

मिसेज गार्डन—बड़ा सुशील लड़का है।

जेनी—एक यह आदमी है, एक आपका विलियम। सूरत से उजड्डपन बरसता है। चेहरे पर सौम्यता की परछाईं तक नहीं।

मिसेज गार्डन—बेटी, सभी आदमी एक-से नहीं होते। यह लोग कुलीन हैं। विलियम का बाप रेलवे-गार्ड था। हाँ, उसने बेटे को अच्छी शिक्षा दिलाई।

जेनी—और आप चाहती हैं कि मैं उस गँवार से विवाह कर लूँ।

मिसेज गार्डन—मेरे पास भी दस हजार देने को होते, तो मैं भी कोई ऐसा ही वर खोजती। जितना गुण डालोगी, उतना ही मीठा तो होगा।

जेनी—इसी लिए तो मैंने निश्चय कर लिया है, विवाह न करूँगी। तुमने देखा मामा, उमा कितनी जली जाती थी।

मिसेज गार्डन—अभी नई मुहब्बत है न।

जेनी—देख लेना, इन दोनों में बहुत दिन पटेगी नहीं। उमा अल्हड़ छोकरी है। योगराज रसिया है। महीने-दो महीने में वह उसकी तरफ से ऊब उठेगा।

मिसेज गार्डन—नहीं जेनी, देख लेना दोनों जीवन-पर्यन्त सुखी रहेंगे।

जेनी—मैं तो कभी पसन्द न करूँ कि कोई मेरे गले में रस्सी डाले फिराया करे।

(मिसेज गार्डन चली जाती हैं। जेनी प्यानो पर बैठकर गाने लगती है—कभी हमसे-तुमसे भी प्यार था !)

परदा

दूसरा दृश्य

(वही मकान, अन्दर का बावरचीखाना। विलियम एक बेत के मोढ़े पर बावरचीखाने के द्वार पर बैठा हुआ है। मिसेज गार्डन पतीली में कुछ पका रही है। विलियम

बड़ा भीमकाय, गठीला, पक्के रंग का
आदमी है, बड़ी-बड़ी मूँछें, चौड़ी
छाती, फौजी जवान-सा मालूम
होता है।)

मिसेज गार्डन—तुमने कभी प्रोपोज भी किया, या यों ही समझ लिया, कि वह इन्कार कर देगी?

विलियम—मेरी हिम्मत ही जवाब दे देती है। औरतों के सम्मुख मर्द इतना मूक हो जाता है, इसका अनुभव मुझे अब हुआ।

मिसेज गार्डन—कायर कहो। ऐसे कायर प्राणी कभी फलीभूत नहीं हो सकते। तुम ताकते ही रह जाओगे और कोई दूसरा आदमी आ कूदेगा।

विलियम—इसकी तो मुझे चिन्ता नहीं है मिसेज गार्डन, उसका और अपना खून एक कर दूँगा। मैं चाहे जेनी को न पा सकूँ; पर कोई दूसरा भी उसे मेरे जीते-जी नहीं पा सकता।

मिसेज गार्डन—फिर वही उजड्डपन की बात! अरे तू प्रोपोज क्यों नहीं करता भई?

विलियम—कैसे प्रोपोज करूँ, यही तो मुझे नहीं आता। कई किताबें देखीं; मगर कुछ साफ न खुला।

मिसेज गार्डन—उसे कभी पार्क-वार्क में ले जाओ वहाँ एकान्त में प्रोपोज करो। और मैं क्या बताऊँ?

विलियम—वह जब मेरे साथ कहीं जाय भी। मुझे देखते ही तो उसके चेहरे पर उदासी छा जाती है। चाहती है, मैं उठकर चला जाऊँ। कभी खातिर से बैठाये, कुछ बात-चीत करे, तब तो मेरा दिल बढ़े।

मिसेज गार्डन—तो क्या तुम साल-भर से यों ही रस्ता नापने आते हो?

विलियम—मेरी पहुँच तो आपही तक है।

मिसेज गार्डन—तो क्या मुझसे शादी करेगा? कैसा युवक है!

होशियार मर्द एक घंटे में औरत को रास कर लेता है, तुम्हें साल-भर दौड़ते हो गया और अभी क, ख, की नौबत भी नहीं आई। कुछ तुममें बूता हो, तो मैं भी जोर लगाऊँ। बछड़ा तो खूँटे ही के बल पर कूदेगा। आखिर तुमने उसे अपनी ओर आकर्षित करने के लिए अब तक क्या-क्या कारर्वाई की ?

विलियम—मैंने अँग्रेजी बोलने का अच्छा अभ्यास कर लिया है।

मि० गार्डन—खूब! तो क्या आप अंग्रेजी में प्रोपोज करेंगे, या वह तुम्हारे अंग्रेजी भाषण का प्रवाह देखकर तुम्हारे ऊपर लट्टू हो जायगी ?

विलियम—मैंने गाना भी सीख लिया है।

मि० गार्डन—यह तुमने बहुत अच्छा किया। वह गाने में कुशल है। संभव है रुचि की समानता आगे चलकर मैत्री का रूप धारण कर ले। प्यानो बजा लेते हो ?

विलियम—जी हाँ, अच्छी तरह।

मि० गार्डन—अभी तो जेनी के आने में देर है। अपनी सहेली से मिलने गई है। चलो देखूँ तुम कैसा प्यानो बजा लेते हो ?

(दोनों प्यानोवाली कोठरी में जाते हैं। विलियम प्यानो पर एक बेसुरा अलापता है।)

मि० गार्डन—लाहौल बिलाकूवत! यही आपका गाना है। खुदा के लिए कहीं उसके सामने प्यानो न बजाने लगना, नहीं उसे तुम्हारी सूरत से घृणा हो जायगी।

विलियम—अभी तो सीख रहा हूँ मिसेज गार्डन, कुछ दिनों में देखिएगा!

मि० गार्डन—जाओ भी, चले हो गाना सीखने। अच्छा और क्या सीखा ?

विलियम—टेनिस खेलने लगा हूँ।

मि० गार्डन—हाँ, इसकी बड़ी जरूरत थी। खूब अच्छी तरह खेल लेते हो?

विलियम—जी हाँ, कहिए तो दिखाऊँ?

मि०गार्डन—टेनिस भी तो प्यानो ही की तरह नहीं सीखा है?

विलियम—नहीं जी, खूब खेलता हूँ। अच्छे-अच्छों के छक्के छुड़ा दिये हैं।

मि० गार्डन—सच! अच्छा कमरे में चलकर दिखाओ तो जरा अपना खेल।

(दोनों कमरे में आते हैं। मिसेज गार्डन खूँटी पर से दोनों रैकेट उतार लेती है। दोनों एक एक रैकट लेकर आमने-सामने खड़े हो जाते हैं। विलियम गेंद सर्व करता है। मिसेज गार्डन गेंद को उसकी तरफ लौटाती है। वह गेंद की तरफ लपकता है और जोर में आकर लुढ़क जाता है। फिर सँभलकर खड़ा होता है।)

मि० गार्डन—यही आपका खेल है! तुम इसमें भी फेल हो गये। खुदा के लिए कहीं जेनी के सामने न खेलना, नहीं मुफ्त को भद हो।

विलियम—मैं गिरा थोड़े ही था। जोर से दौड़ा तो जरा पाँव फिसल गया।

मि० गार्डन—अच्छा टेनिस-सूट तो बनवा लिया है?

विलियम—यह तो मुझसे किसी ने बताया ही नहीं!

मि० गार्डन—शाबाश! तो यही लाँग बूट पहनकर टेनिस खेलते हो?

विलियम—बूट पहनकर खूब दौड़ते बनता है।

मि० गार्डन—वाही हो और क्या। मैं पूछता हूँ, आखिर तुम किस दुनिया में रहते हो? पहले टेनिस सूट बनवाओ, तब टेनिस खेलो। यह नहीं कि यह लकड़तोड़ जूते और यह नीचा कोट पहनकर टेनिस खेलने लगे। तुम्हारी हँसी उड़ती होगी और क्या?

विलियम—मुझसे तो लेडी डगलस ने यही कहा कि फौजी आदमियों के लिए टेनिस सूट की जरूरत नहीं।

मि० गार्डन—अच्छा, अब आदमी बनना सीखो। यह जंगल-सी मूछें साफ कराओ। वह जमाना दूसरा था, जब औरत मर्द की मूछें देखकर खुश होती थी। मुझे ही ले लो। मुड़ी हुई मूँछें मुझे एक आँख नहीं भातीं, लेकिन अब जमाना बदल गया है। अब स्त्री चाहती है कि मर्द का चेहरा साफ हो। बालों का चिह्न तक न हो।

विलियम—तो कल ही लीजिए। इसमें कौन छप्पन टके का खर्च है।

मि० गार्डन—अच्छा कुछ नाचना-वाचना भी सीखा है? जेनी बहुत अच्छा नाचती है।

विलियम—जी हाँ, नाचना तो मुझे पहले ही से आता है।

मि० गार्डन—अच्छा जरा दिखाओ।

(विलियम वहीं बन्दरों की भाँति उचकने लगता है। नाचते समय अपने स्थूल शरीर को सँभालने में उसकी मुखाकृति ऐसी विकृत हो जाती है कि मि० गार्डन हँसते-हँसते लोट जाती हैं।)

मि० गार्डन—रहने भी दो। यह आप का नाच है, जैसे बनैला सुअर किलोल करे। भाई यह बेल मुँड़े चढ़ने की नहीं। अभी तुममें बड़ी-बड़ी त्रुटियाँ हैं। पहले इनको दूर करो! तब हिम्मत करके एक दिन प्रोपोज करो।

विलियम—त्रुटियाँ तो मैं पूरी कर लूँगा; लेकिन प्रोपोज करना टेढ़ी खीर है।

मि० गार्डन—मैं एक बात कहूँ—जरा-सी शराब पी लेना।

विलियम—ऐसा न हो, बहकने लगूँ!

मि० गार्डन—अजी नहीं, थोड़ी-सी पीना और बढ़िया किस्म की, जिसमें मुँह से सुगन्ध आवे; और देखो, गँवारों की तरह बात-चीत न किया करो। शिष्टाचार सीखो। पहनावा भी भले आदमियों-सा रखो। टाई और

कालर रेशमी लो। कोट के बटन में एकाध गुलाब लगा लिया करो। यह मोटा सोटा लेडियों के पसन्द की चीज नहीं। हलकी-सी सोफियानी छड़ी लो। यह तुमने डिबिया-सी घड़ी और जंजीर जो लगा रखी है, इसे घता बताओ। सुनहरी घड़ी कलाई पर बाँधो। तुम्हारे घर में कितने नौकर हैं?

विलियम—नौकर! नौकरों की क्या जरूरत है! एक बूढ़ी दाई है, वह रोटी और गोश्त पका देती है। दोनों वक्त। सुबह को दो सेर दूध खुद दुहा लाता हूँ। कच्चा पी जाता हूँ। बुढ़िया बिस्तर डाल देती है। और मुझे नौकर की जरूरत ही क्या है! दफ्तर से आकर दो-ढाई सौ हाथ लेजिम के फेर लेता हूँ। खाना खाकर सो जाता हूँ।

मि० गार्डन—अगर यही तुम्हारी रहन-सहन है तो जेनी से हाथ धो रखो। वह मजदूर पति नहीं, जेण्टिलमैन पति चाहती है।

विलियम अब तक तो मुझे किसी ने कुछ बताया ही नहीं। अब आपने सलाह दी है, देखिए कितनी जल्द जेण्टिलमैन बन जाता हूँ।

मि० गार्डन—कुछ न हो तो एक बेयरा, एक खानसामा और एक अर्दली तो होना ही चाहिए। बावरची अलग। एक मेहतर, एक धोबी और एक बागवान भी रखा। और कैसे मालूम होगा कि तुम साहब हो। अभी मोटर न हो तो कोई हरज नहीं; लेकिन साल-दो साल में उसका प्रबन्ध भी करना पड़ेगा। घर में कुछ तसवीरें हैं।

विलियम—जी हाँ, अखबारों में जो अच्छी तसवीर नजर आ जाती है, फ्रेम करा लेता हूँ।

मि० गार्डन—शाबाश! तब तो तुम आर्ट के बड़े रसिक हो। अच्छा, कभी सिनेमा देखने जाते हो?

विलियम—वहाँ जाकर नींद कौन खराब करे मि० गार्डन! मुझे तो उसमें कुछ मजा नहीं आता।

मि० गार्डन—तो तुम निरे गँवार हो। खाना, काम करना और सोना जानते हो। सभ्यता तो जैसे तुम्हें छू नहीं गई.....।

(जेनी की आहट मिलती है। विलियम पिछवाड़े के द्वार से बदहवास भागता है।)

जेनी—आज उमा और उसका पति बिदा हो गये मामा ! उमा बहुत रोती थी। मेरे गले लिपटकर रोने लगी। मुझे भी रोना आ गया। अब बेचारी न जाने कब आयेगी।

मि० गार्डन—इन लोगों में बिदाई के समय रोने का बुरा रिवाज है।

जेनी—क्या जाने मामा ! मुझे तो खुद रोना आ रहा था। मैं तो तुम्हारे पास से जाने लगूँ, तो मुझे जरूर रोना आये। योगराज एक सिनेमा कम्पनी का डाइरेक्टर है, मामा ! १५००) वेतन पाता है।

मि० गार्डन—अच्छा ! मगर अभी उम्र तो कुछ नहीं है। अपनी-अपनी तकदीर है।

जेनी—अमेरिका और इंगलैण्ड हो आये हैं मामा ! अमेरिका में एक कम्पनी के डाइरेक्टर रहे। कितनी ही युवतियाँ वहाँ उनसे शादी करने पर तुली हुई थीं। कितनी ही तो लाखों की सम्पत्ति उन्हें दे रही थीं ; लेकिन उनकी मँगनी पहले ही उमा से हो गई थी। सबको सूखा जवाब दिया। वहाँ होते तो अब तक उन्हें चार-पाँच हजार मिलते होते। इस फन में उन्हें कमाल है। उमा है बड़ी नसीबवाली। मुझे उन्होंने अपनी कम्पनी में बुलाया है। पहले १०००) देंगे।

मि० गार्डन—(बेटी को गले लगाकर) सच !

जेनी—हाँ मामा ! वह तो मुझे अपने साथ ले चलने पर जोर दे रहे थे। मैंने कहा—अभी मुझे कुछ तैयारी करनी है। मुझे ५००) का चेक तैयारियों के लिए दे गये हैं।

मि० गार्डन—खुदा का लाख-लाख शुक्र है कि उसने आड़े वक्त में हमारी मदद की। बड़ा शरीफ आदमी मालूम होता है।

जेनी—(कुछ शरमाते हुए) अगर उमा मेरी सहेली न होती और मुझसे इतना प्रेम न करती होती, तो एक बार मैं अपने भाग्य की परीक्षा करती।

मि० गार्डन—क्या कहती है जेनी ! विवाहित पुरुष के साथ !

जेनी—शादी-विवाह बच्चों का खेल है, मामा ! यह केवल स्त्री और पुरुष के मन का समझौता है। इसमें धर्म को घसीटना मूर्खता है। मैं रूप-रंग में उमा-जैसी नहीं ; लेकिन उन्हें मैं जितना आकर्षित कर सकती हूँ, उमा नहीं कर सकती। काश, विवाह के पहले इनसे मेरा परिचय हो गया होता ! मेरा गाना सुनकर मस्त हो गये। और तुमसे क्या कहूँ। खेद यही है कि वह उमा के पति हैं और उमा इतनी निष्कपट और सरल है कि मुझे उस पर दया आती है। वह तो चाहती है कि उन्हें किसी औरत की हवा भी न लगे।

मि० गार्डन—(चिन्ता-भाव से) जब तेरे मन की यह दशा है जेनी, तो मैं तेरा उस कम्पनी में जाना उचित नहीं समझती।

जेनी—तुम भी मामा, मुझे छोकरी समझती हो। मैं योगराज को दिल से चाहती हूँ ; लेकिन क्या मजाल कि मेरे मुँह से एक शब्द भी निकले, या इशारों से भी इसका आभास मिले। मैं न इतनी कृतघ्न हूँ और न इतनी मदमाती।

मि० गार्डन—खुदा तेरे इरादों को पाक रख बेटी ! यही सज्जनों का धन है। खुदा ने चाहा, तो तुझे इससे अच्छा आदमी मिल जायगा। चलो, खाना तैयार है।

(दोनों खाना खाने जाती हैं।)

परदा

तीसरा दृश्य

(वर्षाकाल का एक प्रभात। बादल घिरे हुए हैं। एक शानदार बँगला। दरवाज़ों पर जाली लोट के परदे पड़े हुए हैं। उमा

एक कमरे में पलंग पर पड़ी हुई है। एक औरत उसके सिर में तेल डाल रही है। उमा का मुख पीला पड़ गया है। देह सूख गई है, कमरे के पीछे की तरफ दो खिड़कियाँ हैं, जो बाग में खुलती हैं।)

उमा—(आईने की ओर देखकर) यौवन इतना अस्थिर है, इसकी मैंने कल्पना भी न की थी। मानों एक स्वप्न था कि आँख खुलते ही गायब हो गया; मगर कितना मधुर स्वप्न था! मैं स्वर्ग की अप्सरा की भाँति विमान पर बैठी आकाश में विहार करती थी। अब न वह विमान हैं, न वह स्वर्ग। मैं अपनी सारी निधि खोकर दया की भिक्षा पर पड़ी हुई हूँ। क्यों चम्पा, तू भी कुछ देखती है, बाबूजी के स्वभाव में कितना परिवर्तन हो गया है! मुझे ऐसा जान पड़ता है कि अब उन्हें मेरे समीप बैठने में आनन्द नहीं आता।

चम्पा—नहीं बहूजी, ऐसा न कहें। बाबूजी को मैंने कई बार आपके सिरहाने खड़े रोते देखा है। मुझे देखते ही उन्होंने रूमाल से आँखें छिपा लीं और बाहर चले गये। आप यहीं लेटी रहती हैं और वह दबे पाँव कमरे के द्वार पर टहलते रहते हैं। शायद उन्हें शंका होती है कि उनके आने से आपको कष्ट होगा।

उमा—(अविश्वास से देखकर) मुझे उनके आने से कष्ट होगा! यह उनका प्रेम है, जो मुझे जिन्दा रखे हुए है चम्पा! वही ज्योति मुझे जीवन प्रदान कर रही है। नहीं अब तक यह दीपक कब का बुझ गया होता।

(लेडी डाक्टर के साथ योगराज कमरे में आता है और उसे कुरसी पर बैठाकर बाहर चला जाता है।)

लेडी डा०—आज तो आपकी तबियत अच्छी मालूम होती है।

उमा—होगी! मुझे तो कोई फर्क नहीं मालूम होता।

लेडी—रात को नींद आई थी!

उमा—जी नहीं। पलक तक नहीं झपकी।

लेडी—मैंने तो आपसे पहले ही कहा था, कुछ दिनों के लिए पहाड़ पर चली जाइए। आप राजी न हुईं। कम-से-कम सुबह को हवा खाने तो चली जाया करो।

उमा—इच्छा ही नहीं होती मेम साहब! सोचती हूँ, जब मरना ही है, तो क्या छः महीने पहले और क्या छः महीने पीछे।

लेडी—नहीं-नहीं, तुम बहुत जल्दी अच्छी हो जाओगी उमा देवी। अगर तुम पहाड़ों पर चली जाओ, तो एक महीने में चंगी हो जाओगी। मैं आज बाबूजी से कहती हूँ, तुम्हें कल भेज दें।

उमा—आप मुझे अकेले जाने को कहती हैं। मैं अकेली नहीं रह सकती।

लेडी—नहीं, अब मैं अकेली जाने को न कहूँगी। बाबूजी तुम्हारे साथ जायँगे।

उमा—(प्रसन्न होकर) हाँ! तब मुझे जाने में कोई इन्कार नहीं है।

(लेडी डाक्टर थर्मामीटर लगाकर ज्वर देखती है और नुस्ख़ा लिखकर चली जाती है। द्वार पर योगराज खड़े हैं।)

लेडी—इनकी हालत खराब होती जाती है। आप इन्हें पहाड़ पर ले जायँ। मैंने पहले इस पर ज्यादा जोर न दिया था। मैंने समझा था, दवाओं से काम चल जायगा; लेकिन अब मालूम होता है, पहाड़ों पर जरूर ले जाना पड़ेगा।

योगराज—मैं कल ही चला जाऊँगा!

(दोनों योगराज के कमरे में आकर बैठते हैं)

लेडी—हाँ जाइए; मगर आपने किसी तरह का कुपथ्य किया तो आपको इनसे हाथ धोना पड़ेगा। अब मैं साफ-साफ कहती हूँ, आपके ही कारण इनकी यह दशा हुई। साल-भर में दो गर्भ-पात और तीसरा गर्भ! एक कमसिन, कोमल प्रकृति की बालिका कितना अत्याचार सह सकती!

आप शिक्षित हैं, दुनिया देख चुके हैं, आपको विवाह करने के पहले इस विषय का ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए था। पहले गर्भ-पात के बाद आपको कम-से-कम साल-भर के लिए उन्हें मैके भेज देना चाहिए था। इनसे पृथक् रहना जरूरी था; पर आपने जरा भी परवाह न की। जिस वक्त उमादेवी आई थीं, मैंने उन्हें देखा था। खिले हुए गुलाब का-सा चेहरा था। एक साल के अन्दर उनकी यह दशा हो गई कि देह में रुधिर का नाम नहीं। इसके जिम्मेदार आप हैं।

योगराज—लेडी विलसन, ईश्वर के लिए मुझे क्षमा कीजिए। मैं आपसे कसम खाकर कहता हूँ कि मुझे कुछ न मालूम था।

लेडी—तो यह किसका दोष है! अगर कोई आदमी तैरना न जानने पर भी दरिया मे कूदे, तो यह किसका दोष है! जिसने घोड़े पर सवारी करना न सीखा हो, उसे क्या अधिकार है कि वह घोड़े को दौड़ाये! उमादेवी बालिका थी। अपने कर्तव्य का उसे ज्ञान न था। इस विषय में न उसने कुछ पढ़ा, न किसी से बात-चीत की। वह तो इतना ही जानती थी कि आप उसके स्वामी हैं, आपकी इच्छाओं के आगे सिर झुकाना उसका कर्त्तव्य है। उसे क्या मालूम था कि वह आपकी क्रामुता के सामने सिर झुकाकर अपने लिए विष बो रही है। आपको भी चाहे अभी कुछ न मालूम होता हो; पर जल्द या देर में इसका असर अवश्य होगा। प्रकृति उन लोगों को कभी क्षमा नहीं करती, जो उसके नियमों को तोड़ते हैं।

(योगराज निःस्पन्द बैठा रहता है, मानों निष्प्राण हो।
जब लेडी विलसन टोपी उठाकर जाने लगती है,
तो वह चौंककर खड़ा हो जाता है।)

योगराज—लेडी विलसन, ईश्वर के लिए इन्हें किसी तरह बचा लीजिए। मैं उम्र-भर आपकी गुलामी करूँगा। आप मुझसे मेरा सब कुछ ले लें, केवल इन्हें बचा लें, मुझ पर दया कीजिए।

लेडी—लाला योगराज, बच्चों की-सी बातें न करो। बचाना मेरे बस

की बात नहीं है। मैं यथाशक्ति यत्न करूँगी, यह मेरा धर्म है। इससे ज्यादा मैं और कुछ नहीं कर सकती। आपने भी वही नादानी की, जो आपके दूसरे भाई किया करते हैं। स्त्री उनके लिए केवल विषय-भोग का यन्त्र है। वह स्त्री पर जितना अत्याचार चाहें, कर सकते हैं। अगर स्त्री की ओर से कुछ अरुचि हो, तो उसके शत्रु हो जायँगे। वह बेचारी पति को प्रसन्न रखने के लिए सब कुछ झेलने को तैयार रहती है। सभी घरों में यही तमाशा देखती हूँ। अगर क्षय रोग न फैले, तो क्या हो; लेकिन अब भी घबराने की कोई बात नहीं। कल आप इन्हें पहाड़ पर ले जाइए और पूरा विश्राम दीजिए। नहीं तो आपको पछताना पड़ेगा।

(लेडी विलसन चली जाती है। योगराज फिर उमा के पास आता है।)

उमा—क्या कहती थीं लेडी विलसन? तुमसे अलग क्या बातें कर रही थीं?

योगराज—कुछ नहीं, वही पहाड़ पर जाने की बात-चीत थी। मैंने निश्चय किया है, कल हम लोग चल दें।

उमा—तो मेरे घर एक खत लिख दो। अम्माँ और दादा से मुलाकात तो कर लूँ। जेनी से भी मिलने का जी चाहता है। उसे भी एक खत लिख दो।

योगराज—इसमें कई दिन लग जायँगे उमा!

उमा—जैसी तुम्हारी इच्छा। कहीं मर गई, तो उन लोगों को देख भी न सकूँगी!

(उसकी आँखों से आँसू की दो बूँदें गिर पड़ती हैं। योगराज झुककर उसके माथे का चुम्बन लेता है।)

योगराज—(भर्राई हुई आवाज में) नहीं, नहीं उमा! ईश्वर ने चाहा, तो तुम वहाँ से स्वस्थ होकर आओगी। वहाँ के जल-वायु का जरूर असर होगा।

उमा—(चम्पा से) अब रहने दे चम्पा। बाहर जा, फिर बुलाऊँ तो आ जाना।

(चम्पा चली जाती है।)

मेरे पास आ जाओ राजा। कुछ याद है तुम्हें, आज हमारे विवाह की पहली बरस-गाँठ है। आज ही के दिन तुम मेरे घर गये थे। ज्यों ही मुझे बरात आने की खबर मिली, मैं कोठों पर चढ़कर तुम्हे देखने गई थी। तुम मुझे नहीं देख सके थे ; पर मैंने तुम्हें खूब देखा था। कितनी जल्द एक पूरा साल बीत गया! आज उसका उत्सव मनाऊँगी। तुम भी दफ्तर न जाना। आज मेरा जी कुछ हलका मालूम होता है। तुम्हारे साथ खूब बातें करूँगी। तुम चले जाते हो, तो घर फाड़ खाने लगता है। एक छन भी तुम्हे नहीं देखती, तो जी घबड़ा उठता है। आज मैं अपना कमरा फूलों से सजाऊँगी ; लेकिन नहीं। फूलों को न तोड़ना। (बाग की ओर देखकर) अपनी डालियों पर कितने सुन्दर लगते हैं! तोड़ने से मुरझा जायँगे।

(चम्पा को बुलाती है, वह आकर खड़ी हो जाती है।)

देख चम्पा, जरा मेरी वह साड़ी निकाल ला, जो कई महीने हुए कश्मीर से मँगवाई थी। एक बार भी नहीं पहन सकी। आज उसे पहनूँगी, देख और कपड़ों की तह न बिगड़े। साड़ी में थोड़ा अगर मल देना। आज इनसे इनाम लूँगी।

(चम्पा चली जाती है।)

बतलाओ, आज मुझे क्या सौगात दोगे ? कोई अच्छी-सी चीज देना।

योगराज—(काँपते हुए स्वर में) क्या लोगी उमा ? मेरे पास जो कुछ है वह तुम्हारा है।

उमा—(मुसकिराकर उसके गले में हाथ डाल देती है) जी नहीं, इन बातों में मैं नहीं आती। मैं जो कुछ माँगूँगी, वह तुम्हें देना होगा।

योगराज—तुम्हारे लिए मेरी जान हाजिर है उमा!

उमा—मैं तुमसे एक वचन माँगती हूँ।

योगराज—यह तो तुमने कुछ न माँगा।

उमा—नहीं, मैं वही वचन लूँगी। उसमें मुझे जितना आनन्द मिलेगा उतना और किसी चीज से न मिलेगा। वचन दो कि मैं मर जाऊँगी, तो मेरी सोहाग-सिंदूर की डिबिया पर रोज दो फूल चढ़ाओगे। उसी सिंदूर ने तो मुझे तुम्हारा प्रेम दान दिया था। तुम्हें छोड़कर मुझे संसार में उससे प्रिय और कोई वस्तु नहीं है। उसकी याद बनाये रखना।

(योगराज मुँह फेरकर रूमाल आँखों पर रख लेता है और आँसुओं को रोकता हुआ कमरे के बाहर चला जाता है। एक मिनिट तक वह सामने के अशोक-वृक्ष के नीचे खड़ा फूट-फूटकर रोता है। फिर उमा का पुकारना सुनकर द्वार की ओर चलता है; पर अश्रु-विह्वल हो जाने के कारण द्वार पर रुक जाता है।)

परदा

चौथा दृश्य

(जेनी का मकान, सन्ध्या का समय, विलियम टेनिस सूट पहने, मूँछें मुड़ाये, एक रैकेट हाथ में लिये नशे में चूर आता है।)

जेनी—आज तो तुमने नया रूप भरा है विलियम! यह किस गधे ने तुमसे कहा कि मूँछें मुड़ा लो! बिलकुल हीजड़ों से लगते हो। अपने सिर की कसम। यह तुम्हें क्या सनक सवार हुई। अच्छी खासी मूँछें थीं,

मुंड़ाकर सफाया कर दिया। जरा जाकर आईने में अपनी सूरत देखो। एक तो माशा अल्लाह आप यों ही बड़े रूपवान हैं, उस पर मूँछें मुड़ा लीं। हो निरे गावदी।

विलियम—(कुरसी जेनी के पास खींचकर) आज का दिन बड़ा मुबारक है जेनी!

जेनी—(मुँह फेरकर) अरे, तुमने तो शराब पी है। (नाक बन्द करके) नाक फटी जाती है। अलग बैठिए आप। आज तुम्हें हो क्या गया है?

विलियम—(जेनी की तरफ झुककर) आज मेरा दिमाग सातवें आसमान पर है जेनी! मैं वह विलियम नहीं हूँ अब। आज मैं उस जीवन का स्वप्न देख रहा हूँ, जिस पर फरिश्ते भी लट्टू होते हैं। आज मुझे वह वरदान मिलनेवाला है, जिस पर तीनों लोक की निधि कुरबान है, आज मैं तुम्हें अपनी जीवन-सहचरी बनने की दावत देने आया हूँ। आज मैं प्रोपोज कर रहा हूँ। (कुरसी से उतरकर जेनी के पैरों पर सिर रख देता है) देखो जेनी, खुदा के लिए इन्कार मत करना। बोलो, मेरी प्रार्थना स्वीकार करती हो? तुम्हारे मुख के एक शब्द पर मेरे भाग्य का दारमदार है। अगर हाँ, कहती हो तो मुझसे बड़ा भाग्यशाली संसार में नहीं। ना कहती हो, तो मुझसे बड़ा अभागा संसार में न होगा। यदि तुम्हें मुड़ी हुई मूँछें पसन्द नहीं हैं, तो मैं फिर मूँछें रख लूँगा। देखो मैंने इसी दिन के लिए यह सूट बनवाया है, और मुझे यकीन है कि यह मुझे बुरा नहीं लगता।

जेनी—बिलकुल नहीं, खुदा बुरी नजर से बचाये।

विलियम—(अकड़कर) मैं टेनिस बहुत अच्छा खेलने लगा हूँ।

जेनी—सच!

विलियम—अपने सिर की कसम। और प्यानो भी खूब बजा लेता हूँ।

जेनी—ओहो ! तब तुम पूरे उस्ताद हो गये ।

विलियम—नाचता ऐसा अच्छा हूँ कि तुम देखो तो .खुद नाचने लगो ।

जेनी—वाह ! तब तो कोई वजह नहीं कि मैं तुमसे शादी न करूँ ।

विलियम—यह मेरी जिन्दगी का सबसे मुबारक दिन होगा ।

जेनी—अच्छा तो आओ, हमारी-तुम्हारी शर्तें तै हो जायँ ।

विलियम—सब कुछ गिरजे में हो जायगा जेनी ! ओ हो ! जिस वक्त मैं तुम्हें आलटर की तरफ ले चलूँगा, तुम रेशमी गाउन पहने, हाथ में गुलदस्ता लिये मेरे कन्धे पर सिर रखे चलोगी, वह कितनी मुबारक घड़ी होगी !

जेनी—मुझे उस स्वाँग से नफरत है ।

विलियम—(ताज्जुब से) तो फिर और कैसे शादी होगी जेनी !

जेनी—तुम मेरी शर्तें मान लो, बस शादी हो गई । इसकी क्या जरूरत कि गिरजे चलें, पादरी आये, मेहमान जमा हों, बाजे बजें, रस्में अदा हों । मुझे वह तमाशा पसन्द नहीं । बोलो, मेरी शर्तें मंजूर करोगे ?

विलियम—(निराश होकर) क्या शर्तें हैं जेनी ?

जेनी—मेरी पहली शर्त यह होगी कि जिस दिन तुम्हें किसी दूसरी औरत से बातें करते देखूँ, उसी दिन तुम्हें घर से निकाल दूँ ।

विलियम—(प्रसन्न होकर) हाँ, मंजूर है जेनी ।

जेनी—मेरी दूसरी शर्त यह होगी, कि शादी के बाद भी मुझे अख्तियार होगा, जिससे चाहूँ, हँसूँ-बोलूँ, जहाँ चाहूँ, आऊँ-जाऊँ, जिससे चाहूँ, प्रेम करूँ । बोलो, मानते हो ?

विलियम—यह कैसे मुमकिन है जेनी , तुम हँसी करती हो । उस वक्त अगर कोई मर्द तुम्हारी तरफ आँखें उठाये, तो उसका खून पी जाऊँ, खोदकर जमीन में गाड़ दूँ, जीता निगल जाऊँ ।

जेनी—तो फिर हमारी-तुम्हारी विधि नहीं मिलती ।

विलियम—देखो जेनी, मेरी अभिलाषाओं का खून न करो। मेरी जिन्दगी बरबाद हो जायगी।

जेनी—अच्छा बस, अब हँसी हो चुकी विलियम! तुमने कभी सोचा है, तुम क्यों शादी करना चाहते हो?

विलियम—(हक्का-बक्का होकर) आखिर और सब लोग क्यों शादी करते हैं?

जेनी—और सब लोग झख मारते हैं। मैं तुमसे पूछती हूँ, तुम क्यों शादी करना चाहते हो?

(विलियम सिर खुजलाता है और बगलें झाँकता है।)

जेनी—तुम्हें नहीं मालूम। अच्छा मुझसे सुनो। तुम केवल इसलिए विवाह करना चाहते हो, कि तुम्हारा चित्त प्रसन्न करने के लिए तुम्हारे घर में एक खिलौना आ जाय।

विलियम—बस-बस यही बात है जेनी! तुम कितनी बुद्धिमती हो।

जेनी—तुम इसलिए विवाह करना चाहते हो कि जब मैं बढ़िया सूफियाना साड़ी पहनकर तुम्हारी मोटर साइकिल पर तुम्हारे साथ निकलूँ, तो लोग हँस-हँसकर कहें, वह जा रहा है भाग्य का धनी विलियम!

विलियम—बस-बस यही बात है जेनी! सचमुच तुम बड़ी बुद्धिमती हो।

जेनी—इसलिए कि जब तुम अपने अफसरों की दावत करो, तो मैं उनसे मीठी-मीठी बातें करके उनका दिल खुश करूँ और अफसर खुश होकर तुम्हारी तरक्की करें?

विलियम—बस-बस यही बात है जेनी!

जेनी—इसलिए कि तुम्हारे बच्चे हो जायँ और तुमने जो थोड़ी-सी चाँदी जमा कर रखी है, उसके वारिस पैदा हो जायँ!

विलियम—बस-बस जेनी। सुभान अल्लाह!

जेनी—तो मैंने इसके लिए एक बहुत अच्छी औरत तलाश कर रखा है। वह मुझसे कहीं अच्छी बीबी होगी तुम्हारी। तुम जैसे रखोगे वैसे

रहेगी। जो चाहोगे वह करेगी, तुम्हारे घर में झाड़ू लगायेगी, तुम्हारा खाना बनायेगी, तुम्हारा बिस्तर लगायेगी।

विलियम— (प्रसन्न होकर) वह कौन है जेनी!

जेनी—मेरी मेहतरानी। गोरी, हँस-मुख, चंचल, बाँकी औरत है।

विलियम—तुम मेरा अपमान कर रही हो जेनी! मैं मेहतरानी से विवाह करूँगा! मैं भी खानदान का शरीफ हूँ।

जेनी—अच्छा! तो तुम ऐसी बीबी चाहते हो, जिससे तुम्हारे खानदान की इज्जत में बट्टा न लगे!

विलियम—और क्या!

जेनी—तो तुम अभी शादी का अर्थ नहीं समझे।

विलियम—तो क्या मैं नालायक हूं! मेरे पास ऐसे-ऐसे सर्टिफिकेट हैं कि देखो, तो दंग रह जाओ।

जेनी—अच्छा, यह नई बात सुनी।

विलियम—मैं जो जरा चुपचाप रहता हूँ, तो तुमने समझ लिया कि बस यूँ ही है। मैं अपने मुँह अपनी तारीफ नहीं करना चाहता। इसे मैं ओछापन समझता हूँ; लेकिन जब ऐसा अवसर आ पड़ा है, तो मुझे उन सनदों को पेश करना पड़ेगा। देखो। (जेब से कई चिट्ठियों का पुलिंदा निकालकर) यह मिसेज डगलस का खत है। उन्होंने मेरे टेनिस खेलने की तारीफ की है।

(जेनी खत पढ़ती है—It is hereby certified that Doby William handles his tennis ball just as a skilful wife handles her husband and consequently he should not be disqualified in a matrimonial game on this account.)

जेनी—इस सनद ने तो मेरी जबान बन्द कर दी। तुम्हारे पेट में ऐसे-ऐसे गुण भरे हैं!

विलियम—जी हाँ, और आप क्या समझती हैं। देखती जाइए। यह मिस डासन का खत है।

(जेनी दूसरा खत पढ़ती है—It is hereby certified that Doby William has invented an altogether new dance, never heard of before, and no body else can compete him there. It is no extra qualification in his favour for a matrimonial job.)

जेनी—तुमने ऐसे-ऐसे लाजवाब सर्टिफिकेट छिपा रखे हैं! तुम तो छिपे रुस्तम निकले।

विलियम—देखती जाइए। इस चिट्ठी में हेडमास्टर साहब ने मेरे चाल-चलन की प्रशंसा की है। और यह सनद दिखाना तो मैं भूल ही गया। यह हिज हाइनेस गवर्नर ने मेरे फादर को दिया था। मुझे कोई मामूली आदमी न समझिए।

(मिसेज डगलस और मिस डासन दो औरतों के साथ आती नजर आती हैं। विलियम फौरन भाग खड़ा होता है।)

मिस डासन—मैंने कहा, चलूँ विलियम का तमाशा देखती आऊँ। आज तुम्हें प्रोपोज करने आया था। मेरे सिर हो गया कि मुझे एक सर्टिफिकेट लिख दो। बताओ, क्या लिखती?

मिसेज डगलस—निरा अहमक है। मुझसे जिद करने लगा कि टेनिस का सर्टिफिकेट दे दीजिए। रैकट पकड़ने का तो शऊर नहीं। भला मैं क्या लिखती?

मिस डासन—क्या हुआ, उसने प्रोपोज किया? जरा उसका किस्सा कहो।

मिसेज डगलस—यही सुनने के लिए तो भागी आ रही हूँ।

जेनी—तुम्हें देखते ही भाग खड़ा हुआ। मगर तुमने बड़े मजे का सर्टिफिकेट दिया। फूला न समाता था। जेब में लिये फिरता है।

दोनों लेडियाँ—क्या-क्या! हमने कब कोई चिट्ठी दी!

जेनी—दिखाता तो था!

मिस डासन—तो कम्बख्त ने अपने हाथ से लिख ली होगी। जभी भागा। कहाँ हैं दोनों चिट्ठियाँ?

जेनी—चिट्ठियाँ तो लेता गया; पर उसका मजमून मुझे याद है। हजरत ने अपनी दानिस्त में अपनी तारीफ लिखी थी।

(जेनी एक कागज पर दोनों खतों को याद से लिखती है, और तीनों हँसते-हँसते लोट जाती हैं।)

(परदा)

पाँचवाँ दृश्य

(योगराज का बँगला। प्रातःकाल। योगराज और जेनी एक कमरे में बैठे बातें कर रहे हैं। योगराज के मुख पर शोक का गाढ़ा रंग झलक रहा है। आँखें सूजी हुई, नाक का सिरा लाल, कण्ठ-स्वर भारी। जेनी सफरी कपड़े पहने हुए है। मालूम होता है, अभी बाहर से आई है।)

जेनी—मुझे यही पछतावा हो रहा है कि एक दिन पहले क्यों न आई। जिस समय मुझे तार मिला, अम्माँ कुछ अस्वस्थ थीं। मैंने समझा, जरा इनकी तबीयत सँभल जाय, तो चलूँ; अगर जानती कि यह आफत आने-वाली है, तो तुरन्त भागती। देखने भी न पाई!

योगराज—आपका नाम अन्त समय तक उनकी जबान पर था। बार-बार आपको पूछती थीं। (लंबी साँस खींचकर) मैं तो कहीं का न

रहा मिस जेनी ! मुझे जीवन में वह विभूत मिल गई थी कि उसे खोकर अब संसार मेरी आँखों में सूना हो गया। और यह सब मेरे ही कर्मों का फल है। मैं ही उनका घातक हूँ। मेरी ही भोग-लिप्सा ने उस कच्चे फल को तोड़कर जमीन पर गिरा दिया ! उन्हें दो बार गर्भ-पात हुआ ; पर मेरी अन्धी आँखों को कुछ न सूझता था। जिस फूल को सिर और आँखों और हृदय से लगाना चाहिए था, जिसकी सुगन्ध से मुझे अपने जीवन को बसाना चाहिए था, उसे मैंने पैरों से कुचला। कभी-कभी जी में ऐसा उबाल आता है कि दीवार से सिर पटक दूँ। यह दाग दिल से कभी न मिटेगा, यह घाव कभी न भरेगा !

(रोता है।)

जेनी—यों अधीर होने से कैसे काम चलेगा बाबूजी ! मैं तो उसकी सहेली थी, लेकिन मुझे उससे जितना प्रेम था, उतना अपनी सगी बहन से भी न होता। फिर आपके शोक का अनुमान कौन कर सकता है। उसका शील-स्वभाव ही ऐसा था कि बेअख्तियार दिल को खींच लेता था ; किन्तु अब धैर्य के सिवा और क्या कीजिएगा ! खुदा की यही मरजी थी, आदमी की उसमें क्या दखल ! अब इसी विचार से दिल को तसल्ली दीजिए कि यह संसार उसके लिए उपयुक्त स्थान न था। वह स्वर्ग के योग्य थी और स्वर्ग ने उसे ले लिया।

योगराज—हाय ! किसी तरह दिल को तसल्ली नहीं होती मिस जेनी ! यों अपनी मृत्यु से वह मर जाती, तो मैं सब्र कर लेता, लेकिन यह कैसे भूल जाऊँ कि मैंने ही उनकी हत्या की, मेरी ही विषयासक्ति ने उनको जान ली। मैंने अमृत को इस तरह खाया, जैसे कोई पशु घास खाता है। वह देवी मुझ पर कुरबान हो गई। मुझे प्रसन्न रखना उनके जीवन का एक-मात्र उद्देश्य था। मेरी इच्छा के विरुद्ध कभी एक शब्द भी मुँह से न निकाला। प्रातःकाल नींद खुलती, तो उनकी सहास मूर्ति सामने आमोद की वर्षा सी करती हुई दिखाई देती थी। दिन-दिन दुर्बल होती जाती थीं,

लेकिन मेरी खातिरदारी में अणु-मात्र भी कमी न करती थीं। इस घर की एक-एक वस्तु पर उनका प्रेम अंकित है। वह खुद फूलों की तरह कोमल थीं और फूलों से उन्हें असीम प्रेम था। यह गमले जो सामने रखे हुए हैं, उन्हीं के लगाये हुए हैं। खाने की जिस वस्तु में मेरी रुचि देखतीं, उसे अपने हाथों से पकातीं। कुरसियों पर जो यह फूलदार गद्दे हैं, उन्हीं के काढ़े हुए हैं। मेज़ पर जो मेज़पोश है, उन्हीं का काढ़ा हुआ है। तकियों के गिलाफ़ उन्हीं के बनाये हुए हैं। किस-किस बात को रोऊँ! उन्होंने अपने को मुझ पर अर्पित कर दिया। मुझ जैसा अनाचारी, व्यसनी, अधम व्यक्ति इस योग्य न था कि उसे देवी मिलती। ईश्वर ने सुअर के गले में मोतियों की माला डाल दी।

(वह चुप हो जाता है और कई मिनिट तक आँखें बन्द किये बैठा रहता है। सहसा सिर पर ज़ोर से हाथ मारकर कमरे से निकलता है और बगीचे की ओर भागता है। जेनी उसके पीछे-पीछे जाती है। वह बगीचे में खड़ा होकर फूलों की क्यारियों की ओर ध्यान से देखता है, जैसे किसी को खोज रहा हो। फिर वहाँ से लपका हुआ आता है और उमा के कमरे का परदा हटाकर धीरे से अन्दर जाता है और कमरे को खाली पाकर ज़ोर से छाती पीटकर ज़मीन पर गिर पड़ता है। जेनी की आँखों से आँसू बहने लगते हैं। दौड़कर पानी लाती है और उसके मुँह पर पानी के छींटे देती है। एक मिनिट में योगराज चौंककर उठ बैठता है।)

जेनी—बाबूजी, आप बुद्धिमान होकर नादान बनते हैं। इस तरह होश-हवास खो देने से क्या फायदा होगा ?

योगराज—कह नहीं सकता, मुझे क्या हो जाता है, मिस गार्डन ! मुझे ऐसा मालूम होता है जैसे उमा अपने कमरे में बैठी हुई हैं, जैसे बगीचे में घूम रही हैं। जानता हूँ, अब इस जीवन में उनके दर्शन न होंगे ; लेकिन न जाने क्यों यह भ्रम हो जाता है। मन किसी के मुँह से यह सुनने को लालायित रहता है कि वह दस-पाँच दिन के लिए कहीं चली गई हैं। वह कभी न मिलेंगी, सदा के चली गईं, यह असह्य है, मैं इसे नहीं बरदाश्त कर सकता...(एक क्षण के बाद—सिर पर हाथ मारकर) मुझे इसका ध्यान ही न रहा कि आप सफर करके आ रही हैं। हाय ! आज वह होतीं, तो आपको देखकर कितनी ख़ुश होतीं। मैं आपकी क्या ख़ातिर कर सकता हूँ ! ख़ातिर करनेवाला तो चला गया !

(महाराज को पुकारता है।)

देखो, मिस साहब के लिए नाश्ता लाओ, बहुत जल्द और मद्दी को भेजो, आपका हाथ-मुँह धुलाये।

जेनी—आप जरा भी तकल्लुफ न करें बाबूजी ! अभी नाश्ता करने की मेरी जरा भी इच्छा नहीं है। जी नहीं चाहता।

योगराज—तो फिर आपकी खातिर क्या करूँ। आइए, आपको उमा का कमरा दिखाऊँ। देखिए, उन्होंने कैसी-कैसी साहित्य की पुस्तकें जमा कर रखी थीं। उनकी कविताएँ आपको सुनाऊँ।

(दोनों उमा के कमरे में जाते हैं, जो कालीन और गद्देदार कोचों और शीशे के सामानों से सजा हुआ है। योगराज एक अलमारी खोलता है। उसमें उमा के आभूषणों की संदूकची निकल आती है। योगराज तुरत उसे निकाल लेता है और उसे खोलकर एक-एक आभूषण लेकर जेनी को दिखाता है।)

योगराज—यह उनके आभूषण हैं। इन्हें पहनकर वह कितनी प्रसन्न होती थीं! इनके एक एक अणु में उनके स्पर्श का सौरभ है। इन्होंने अपनी सुनहरी आँखों से उनके रूप की छटा देखी है। यह उनके आदर और प्रेम के पात्र रह चुके हैं। यह इस दुरवस्था में पड़े रहें, यह मैं नहीं देख सकता। उन्हें अपने आभूषणों की यह दशा देखकर स्वर्ग में भी कितना दुःख होता होगा! मैं आपके मनोभावों पर आघात नहीं करना चाहता, मिस गार्डन! क्षमा कीजिएगा; लेकिन आप इन चीजों को स्वीकार कर लें, तो उनकी आत्मा को कितनी शान्ति होगी! इनका कोई दूसरा उपयोग ऐसा नहीं है, जिससे उन्हें इतना आनन्द हो। आपको वह अपनी बहन समझती थीं और इस नाते से मैं आपको इन्हें स्वीकार करने के लिए मजबूर कर सकता हूँ।

(विक्षिप्तों की भाँति मुसकिराता है)

जेनी—(सजल नेत्रों से) आपने तो मेरे लिए कुछ कहने की गुंजाइश नहीं रखी बाबूजी। लेकिन मैं अपने को इस योग्य नहीं समझती, आप इन्हें उनके स्मृति स्वरूप अपने पास सुरक्षित रखें। शायद कोई ऐसा समय आवे, जब इनका दावेदार घर में आ जाय। इन्हें मेरी ओर से उसकी भेंट कीजिएगा।

योगराज—(ठट्ठा मारता है) वह समय कभी न अयेगा जेनी। उमा ने जो स्थान खाली कर दिया है, वह हमेशा खाली रहेगा—हमेशा! आप मेरी इस याचना को अस्वीकार करके मुझे बड़ा सदमा पहुँचा रही हैं और उनकी आत्मा को भी; लेकिन मैं जिद्दी आदमी हूँ, जेनी! कभी-कभी पागलों के-से काम करने लगता हूँ। आइए, मैं आपको एक चीज पहनाऊँ। चोट खाये हुए दिल की गुस्ताखियों को क्षमा कीजिएगा।

(वह उस हार को जेनी के गले में डाल देता है। जेनी सिर झुकाये, सजल नेत्र, शोकातुर, बैठी हुई है। योगराज उसकी कलाइयों पर कंगन, शेरदहाँ, ब्रेसलेट पहनाता है, गले में

नेकलेस डाल देता है। केशों में शीशफूल लगा देता है। पैरों में पाजेब डालने के लिए झुकता है। जेनी जल्दी से पाँव हटा लेती है और उसके हाथ से पाजेब लेकर पहन लेती है। सामने आईना रखा हुआ है। जेनी की उस पर नजर पड़ जाती है। वह उसमें अपनी सूरत देखती है और खिल-खिलाकर हँस पड़ती है।)

जेनी—आपने तो मुझे गुड़िया बना दिया। मुझे तो यह चीजे बिल-कुल शोभा नहीं देतीं।

योगराज—आप मेरी आँखों से नहीं देख रही हैं मिस जेनी! मुझे तो ऐसा मालूम हो रहा है कि उमा मेरे ऊपर तरस खाकर आकाश से उतर आई है। आपमें और उसमें इतना सादृश्य है, इसका अब तक मुझे अनु-मान न था। तुम मेरी उमा हो जेनी! तुममे उसी आत्मा का आभास है, वही रूप-माधुर्य है, वही कोमलता है। तुम वही हो, मेरी प्यारी उमा! तुम मुझसे क्यों रुठ गई थीं! मैंने क्या अपराध किया था? इस तरह कोई अपने प्रेमी से आँखें फेर लेता है?

(वह फूट-फूटकर रोने लगता है।)

जेनी—(घबड़ाकर) बाबूजी! होश मे आइए। यह आपकी क्या दशा है!

(आदमियों को पुकारती है।)

परदा

छठा दृश्य

(योगराज का बँगला। जेनी और योगराज बैठे बातें कर रहे हैं।)

जेनी—आई थी दो दिन के लिए और रह गई तीन महीने! अम्माँ

मुझे रोज कोसती होंगी। मैंने कितनी ही बार लिखा कि यहीं आ जाओ; पर आतीं ही नहीं। मैं सोचती हूँ, दो-चार दिन के लिए घर हो आऊँ।

योगराज—अजीब स्वभाव है उनका। रुपये भी वापस कर देती हैं, घर से आतीं भी नहीं। आखिर चाहती क्या हैं?

जेनी—बस यही कि मैं शादी कर लूँ और उनके पास रहूँ। शायद उन्हें यह खौफ भी हो कि कहीं तुम मुझे लेकर भाग न जाओ।

योगराज—(हँसकर) तुम जाओगी, तो फिर लौटकर न आने पाओगी। मेरा फिल्म अधूरा रह जायगा। जब तक ड्रामा पूरा न हो जाय, मैं तुम्हें एक दिन के लिए भी नहीं छोड़ सकता। और अब तुमसे क्यों छिपाऊँ जेनी! छिपाना व्यर्थ है। शायद तुमने पहले ही भाँप लिया है। अब मैं तुम्हारे बगैर जिन्दा नहीं रह सकता। मैंने तुममें अपनी उमा को फिर से पाया। अगर उस वक्त तुम न आ जातीं तो मालूम नहीं, मेरी क्या हालत होती। शायद दीवाना हो जाता, या कहीं डूब मरा होता। तुमने आकर मेरे तड़पते हुए हृदय पर मरहम रखा और मुझे जिला लिया।

जेनी—इसी लिए अब मेरा यहाँ से जाना जरूरी है। मैं जाना नहीं चाहती। शायद इतना तुम भी समझ गये होगे, क्यों नहीं जाना चाहती। लेकिन इसका नतीजा क्या है? खुद रो-रोकर मरूँ और तुम्हें भी हैरान करूँ। मैं तो रोने की आदी हूँ। लेकिन तुम्हारे रास्ते का काँटा क्यों बनूँ? तुम्हारा जी थोड़े दिनों में बदल जायगा। जीवन के आमोद-प्रमोद तुम्हें फिर अपनी ओर खींच लेंगे और जीवन की अभिलाषाएँ फिर जाग उठेंगी। तुम इतने सहृदय, इतने उदार, इतने सज्जन, इतने उन्नतात्मा हो कि जिस किसी से भी तुम्हारा सम्पर्क हो जायगा, उसमें तुम अपना आदर्श आरोपित कर दोगे। जब मुझ जैसी औरत में तुमने गुण देख लिये, तो मुझे मालूम हो गया कि तुम अपना स्वर्ग आप बना सकते हो। मिट्टी को भी सोना बनाने का मंत्र तुम्हें आता है। मैं कभी किसी से प्रेम कर सकूँगी, इसकी मैंने कल्पना तक न की थी। प्रेम मेरे लिए विनोद

और परिहास की वस्तु थी। तुमने मेरे हृदय में प्रेम की ज्योति जलाई और अब उस पिछले जीवन की याद करती हूँ, तो मालूम होता है, कितना नीरस, कितना अस्वाभाविक था, लेकिन इसका कोई इलाज नहीं। विधि हमारे और तुम्हारे बीच मे खड़ी है और.....

योगराज—क्या उस विधि पर हम विजय नहीं पा सकते जेनी!

जेनी—कैसे!

योगराज—हमारी शादी नहीं हो सकती!

जेनी—धर्म के बन्धन को क्या करोगे!

योगराज—मैं धर्म के बन्धन को तोड़ दूँगा।

जेनी—(हाथ से मना करके) नहीं-नहीं, मैं तुम्हें समाज में अछूत नहीं बनाना चाहती। तुम्हारा समाज से निकाल दिया जाना मेरे लिए असह्य है। मैं तुम्हें इतने घोर धर्म-संकट में नहीं डाल सकती। मेरे प्रति तुम्हारा जो सद्भाव है, उस पर इतना भारी बोझ लादना कि कुछ दिनों मे वह दब जाय, न मेरे लिए अच्छा है, न तुम्हारे लिए। मैं मानती हूँ, तुम मेरी खातिर से वह अपमान और उपहास बर्दाश्त करोगे; लेकिन मैं इतनी स्वार्थिन नहीं हूँ।

योगराज—मैं समाज और उसके बन्धनों की परवा नहीं करता जेनी! अगर मैं कोई ऐसा काम करूँ, जिससे समाज का अहित होता हो, तो बेशक समाज मेरा बहिष्कार कर सकता है; लेकिन मैं अपने व्यक्तिगत अधिकार को समाज के भय से नहीं छोड़ना चाहता।

जेनी—(सोचकर) नहीं; ऐसे मामलों में तर्क से काम नहीं चल सकता। मुझे जाने दो। मैं जानती हूँ, तुमसे अलग रहकर संसार मेरे लिए सूना है; लेकिन मुझे इस विचार से संतोष होता रहेगा कि मैंने संसार के निर्दय आघातों से तुम्हारी रक्षा की।

योगराज—यह सन्तोष बहुत थोड़े दिन रहेगा जेनी! अगर तुम्हारा ख्याल है कि तुम्हारे जाने के बाद मैं यह सब कुछ भूल जाऊँगा और फिर

किसी रूपवती रमणी से विवाह करके आनन्द से रहूँगा, तो यह गलत है। तुमने सोचा है, मैं अपना स्वर्ग आप बना सकता हूँ। तुमसे मुझे जो प्रेम है, उसे तुम मेरी इस शक्ति का प्रमाण समझ रही हो। वास्तव मे तुम अपना मूल्य बहुत कम समझ रही हो। मैंने तुममें जो कुछ पाया, जो कुछ देखा, वह फिर कहीं और देख सकूँगा, यह असंभव है। इसका प्रमाण शायद तुम्हें जल्द मिल जाय। निःस्वार्थ प्रेम ऐसी सस्ती चीज नहीं है, जो बाजार में मिलती हो।

(दोनों कुछ देर तक सिर झुकाये विचारों में डूबे बैठे रहते हैं।)

योगराज—अगर यही समाज का भय है, तो क्यों न हम किसी दूसरी जगह चलें, जहाँ कोई हमें जानता ही न हो।

जेनी—(मुसकिराकर) किसान की खेती उसकी आँखों के सामने चरी जाय, क्या तभी उसे दुख होगा ? बिना कोई अपराध किये चोरों की तरह रहना बहुत सुखी जीवन नहीं हो सकता। हम जिनसे आदर और सम्मान चाहते हैं, उन्हीं से निन्दा पाकर दुखी होते हैं। और लोग क्या कहते हैं, इसकी हमें परवा नहीं होनी। मामा तो जहर ही खा लेगी और शायद तुम्हारे घरवाले भी प्रसन्न न होंगे।

योगराज—तुम तो किसी बात पर राजी नहीं होती हो जेनी !

जेनी—जिन हालतों में ईश्वर ने हम दोनों को पैदा किया है, उसका एक ही इलाज है कि हम दोनों एक दूसरे से अलग हो जायँ। मैं तुम्हारे लिए सब कुछ झेलने को तैयार हूँ ; लेकिन तुम्हें संकट में नहीं डाल सकती। तुम्हारे ऊपर यह आक्षेप मैं नहीं सुन सकती कि औरत के पीछे ईसाई हो गया और न शायद तुम मेरे ऊपर यह आक्षेप सुनना पसन्द करोगे कि दौलत के पीछे या भोग-विलास के पीछे एक आदमी के साथ चली गई। मैं आज-कल के प्रथानुसार शुद्ध होकर तुम्हें उस आक्षेप से बचा सकती हूँ ; लेकिन शुद्धि को मैं बिलकुल ढोंग समझती हूँ। मैं अपने स्वभाव से, अपने संस्कारों से, जो कुछ हूँ, वही रहूँगी। हवन कर लेने

या दो-चार मन्त्र पढ़ लेने से मेरे संस्कार नहीं बदल सकते। ईसाई-धर्म में मुझे बहुत-सी बातें खटकती हैं; पर हिंदू-धर्म में भी ऐसी बातों की कमी नहीं। ईसाई-धर्म में कम-से-कम एक तत्त्व अब भी है, और वह सेवा है। हिंदू-धर्म में तो वह चीज भी नहीं। यहाँ तो केवल रूढ़ियाँ हैं, केवल पुरानी लकीरों का पीटना है। इसके लिए मेरी आत्मा तैयार नहीं। मुझे हँसकर विदा कर दो; मगर देखना, यह विच्छेद हमारे आत्मिक ऐक्य को शिथिल न कर दे। मुझसे नाराज न होना, मेरी तरफ से आँख न फेरना। जेनी तुम्हारी है, और तुम्हारी रहेगी, संसार की आँखों में नहीं, ईश्वर की आँखों में, जो संसार की सृष्टि करता है।

योगराज—(कम्पित स्वर में) तो यह तुम्हारा अंतिम फैसला है जेनी?

जेनी—हाँ प्यारे, यही मेरा अंतिम फैसला है। तुम थोड़े दिनों में मुझे भूल जाओगे। ईश्वर से मेरी यही दुआ होगी कि तुम मुझे जल्द-से-जल्द भूल जाओ; लेकिन भूलकर भी कभी-कभी याद कर लिया करना। (रोकर) ये दिन इतनी जल्द गुजर जायँगे, यह मैंने न सोचा था; लेकिन जीवन के लिए जिस प्रेमाधार की जरूरत है वह तुमने मुझे दे दिया और वह मेरी उम्र-भर के लिए काफी है। विवाह मेरी दृष्टि में आत्मिक संबन्ध है। उसे रस्म के बन्धनों से जकड़ना मैं अनावश्यक ही नहीं, पाप समझती हूँ। दिल का मिलना ही विवाह है। रस्म के बन्धन से स्त्री-पुरुष को बाँध देना तो वैसा ही है, जैसे दो पशु एक रस्सी में जोत दिये गये हों। जिस बंधन का आधार समाज या धर्म का भय है, वह कभी सुखकर नहीं हो सकता। सुख का मूल स्वच्छन्दता है, बंधन नहीं। प्रेम भी जल-प्रवाह की भाँति मुक्त रहना चाहता है। अवरोध से उसमें कीट पैदा हो जाते हैं, दुर्गन्ध आने लगती है। मेरा तो विचार है कि प्रेम बन्धनों में पड़कर उसी प्रकार निष्प्राण हो जाता है, जैसे कोई पौदा प्रकाश न पाकर निर्जीव हो जाता है। मैं स्वेच्छा से यहाँ रात-भर बैठी रह सकती हूँ;

लेकिन कोई यह द्वार बन्द कर दे तो मैं इसी क्षण यहाँ से निकल भागने के लिए विकल हो जाऊँगी।

योगराज—मैं तो उसके लिए तैयार हूँ जेनी!

जेनी—लेकिन मैं जो तुम्हें काँटों में नहीं उलझाना चाहती। समाज में तुम्हारा जो स्थान है, उसकी रक्षा करना भी मेरे प्रेम का अंग हो गया है। यह मेरे जीवन का नया अनुभव है। मुझे विश्वास है, तुम अपने ऊपर इस निन्दा और अपमान का कोई असर न होने दोगे; लेकिन मनुष्य तो प्रकृति के नियमों में जकड़ा हुआ है। उससे तुम कैसे बच सकते हो। इस ग्लानि और संकट के वातावरण मे तुम बहुत दिन अपने को न सँभाल सकोगे। मैं तुम्हारे ऊपर सन्देह नहीं कर रही हूँ, लेकिन टालस्टाय की अन्नाकेनिना का अन्त मेरी आँखों के सामने फिरा करता है। मैं उसे भूलना चाहती हूँ, पर असफल होती हूँ।

योगराज—(निराश होकर) तुम्हारी जैसा इच्छा हो जेनी! मैं तुम्हे मजबूर नहीं कर सकता। जाओ, ईश्वर तुम्हारी रक्षा करें। कभी-कभी मेरी खोज-खबर लेती रहना...आज मुझे मालूम हुआ कि उमा मर गई और अब फिर नहीं आ सकती!

(रोने लगता है। फिर अपने को सँभालकर)

यह सदमा शायद मैं बर्दास्त न कर सकूँ जेनी; लेकिन जाओ, जहाँ रहो, सुखी रहो।

जेनी—अपनी शादी में मुझे जरूर बुलाना।

योगराज—जल्द ही होगी जेनी! सुनकर तुम खुद आओगी।

जेनी—हाँ, मैं खुद आऊँगी, लेकिन कम से-कम इत्तला तो दे देना।

(आभूषणों की सन्दूकची उठाकर)

और यह आभूषण उस सौभाग्यवती को मेरी ओर से भेंट कर देना।

योगराज—(सन्दूकची लेकर) धन्यवाद!

उठकर सिर झुकाये आहिस्ता-आहिस्ता कमरे के बाहर चला

जाता है। जेनी एक क्षण तक उसे देखती रहती है, फिर आँखों में आँसू भरे अपना सामान बँधवाने लगती है।)

परदा

सातवाँ दृश्य

(जेनी का मकान। मिसेज़ गार्डन मुरगियों को दाना चुगा रही है।)

विलियम—मिस गार्डन का कोई पत्र आया था?

मि० गार्डन—हाँ, वह खुद दो-एक दिन में आ रही है।

विलियम—मैं तो उसकी ओर से अब निराश हो गया हूँ मिसेज गार्डन! मैं जो कुछ हूँ, वही रहूँगा। मैंने सब कुछ करके देख लिया। वह मेरे बस की नहीं। फिर अब वह खुद एक हजार महीना कमाती है। मेरे तीन सौ उसकी नजरों में क्या जँचेंगे। अब तो वह मुझसे विवाह भी करना चाहे तो न करूँ।

मि० गार्डन—सच! आखिर क्यों उससे नाराज हो गये? उसके एक हजार के साथ तुम्हारे तीन सौ मिलकर तेरह सौ हो जायँगे। इतना हिसाब भी नहीं जानते?

विलियम—लेकिन घर में मेरा पोजीशन क्या होगा, इसका भी आप खयाल करती हैं? मैं अपनी बीवी की नजरों मे गिरना नहीं चाहता। आखिर वह किसलिए मेरा दबाव मानेगी, मेरा लिहाज करेगी? सब लोग यही कहेंगे कि अपनी बीवी की रोटियाँ खाता है, बीवी की कमाई पर शान जमाता है।

मिसेज गार्डन—(मुसकिराकर) तो इसमें क्या बुराई है? औरत

अपने मर्द की कमाई खाती है, उस पर शान जमाती है तब तो उसे जरा भी शर्म नहीं आती।

विलियम—अब मैं आपको कैसे समझाऊँ। मर्द मर्द है, औरत औरत है।

मि० गार्डन—अच्छा! आज मुझे यह नई बात मालूम हुई। मैं तो समझती थी, मर्द औरत है, औरत मर्द है।

विलियम—आप तो मजाक करती हैं। मेरे दिल में जो भाव है उसे कहने के लिए मेरे पास शब्द नहीं। मर्द चाहता है कि स्त्री उसका मुँह ताके, जिस चीज की जरूरत हो, उससे कहे, उसका अदब और लिहाज करे। इसी लिए वह रात-दिन जी तोड़कर परिश्रम करता है, दगा-फरेब, छल-कपट, सब कुछ केवल इसी लिए करता है कि स्त्री की निगाहों में उसकी साख हो। उसकी सबसे बड़ी अभिलाषा यही होती है कि स्त्री ज्यादा-से ज्यादा खातिर कर सके, ज्यादा-से-ज्यादा आराम दे सके। वह स्त्री ही के लिए जीता है और स्त्री ही के लिए मरता है। वह उस पर न्योछावर हो जाना चाहता है। लेकिन जब स्त्री खुद पुरुष से ज्यादा कमानी हो तो उसकी नजर में पुरुष का क्या महत्त्व होगा!

मिसेज गार्डन—अच्छा, तुम्हारा यह मतलब है! लेकिन मैंने तो देखा है कि अकसर पुरुषों को मालदार स्त्रियों की तलाश रहती है।

विलियम—ऐसे पुरुष बेहया हैं मिसेज गार्डन! मैं उन्हें निर्लज्ज समझता हूँ। वह हमेशा स्त्री के मोहताज रहते हैं, उसकी खुशामद करते हैं, उसके इशारों पर चलते हैं। स्त्री उन पर शासन करती है, उनके कान पकड़कर जिस तरह चाहती है, उठाती और बैठाती है। मैं तो यह जिल्लत नहीं सह सकता।

मि० गार्डन—मैंने तो ऐसे मर्द भी देखे हैं, जो स्त्री के धन पर मजे उड़ाते हैं और उस पर रोब भी जमाते हैं।

विलियम—उन लोगों को मैं भाग्यवान् समझता हूँ। मैं अपना शुमार उन भाग्यवानों में नहीं कर सकता। उनमें कुल-प्रतिष्ठा होगी, रूप-आकर्षण होगा, विद्या गौरव होगा। मुझमें तो इनमें से एक गुण भी नहीं। मैं तो सीधा-सादा गरीब मजदूर हूँ। मेरी हिमाकत थी कि मैंने जेनी का रोग पाला। वास्तव मे मैं उसके योग्य नहीं हूँ।

मि० गार्डन—इसी लिए कि वह तुमसे ज्यादा कमाती है!

विलियम—हाँ, प्यारी मिसेज गार्डन! मैंने अपनी गल्ती मालूम कर ली। इस बीच मे मैंने एक बात और मालूम कर ली। देखिए, मेरी हँसी न उड़ाइएगा। मुझे मालूम हुआ है कि जीवन में मुझे ऐसी सहचरी की जरूरत है, जो मुझसे ज्यादा अनुभव, ज्यादा बुद्धि, ज्यादा धैर्य रखती हो, जो अपनी सलाहों से मेरी सहायता करती रहे, जिस पर मै विश्वास कर सकूँ। मै तुममें ये सभी गुण पाता हूँ। (जमीन पर घुटने टेकता है) मैं आपसे प्रोपोज करता हूँ, मिसेज गार्डन! देखिए, खुदा के लिए इन्कार न कीजिएगा। मुझे अब ज्ञात हुआ कि जीवन के आनन्द के लिए रूप और यौवन की इतनी जरूरत नहीं है, जितनी अनुभव और सेवाभाव की। रूपवती युवती मुझमें हजारों त्रुटियाँ पायेगी। वह अपने साथ सन्देह और ईर्ष्या लाती है। मुझे उसकी जासूसी करनी पड़ेगी। वह किससे बोलती है, किससे हँसती है, कहाँ जाती है, मुझे उसकी एक-एक गति पर निगाह रखनी पड़ेगी। यह झंझट मेरे मान का नहीं। आपके ऊपर मैं पूर्ण विश्वास कर सकता हूँ। आप मुझसे कपट नहीं कर सकतीं।

मि० गार्डन—(गर्वोन्मत्त होकर) भला सोचो तो विलियम, दुनिया क्या कहेगी कि इस औरत को बुढ़ापे में यह हवस पैदा हुई है। यही करना था तो आज से तीन साल पहले क्यों न किया! तब तो मैं इतनी बूढ़ी न थी। तब शायद तुम्हें कुछ अधिक संतुष्ट कर सकती।

विलियम—इसका तो मुझे भी खेद है।

मि० गार्डन—अच्छा बतलाओ, मुझ पर रोब तो न जमाओगे?

विलियम—नहीं, खुदा की कसम। मैं आपके हुक्म के बगैर एक पग भी न चलूँगा।

(मिसेज गार्डन विलियम को छाती से लगाती है।)

मि० गार्डन—मैं तुम्हारी ओर से बहुत आशंकित थी विलियम, कि कहीं तुम किसी मायाविनी के जाल में फँस न जाओ। तुम इतने सरल, इतने निष्कपट, इतने भोले-भाले हो कि मुझे तुम्हारी ओर से बराबर यही खटका लगा रहता था। इसी लिए मैं तुम्हें जेनी से मिलाती रहती थी। जेनी में और चाहे कितनी ही बुराइयाँ हों, चंचलता नहीं है। तुम्हें याद है, प्यारे विलियम, मेरी तुमसे पहली मुलाकात पार्क में हुई थी। मैं गिरजे से लौट रही थी। उसी दिन तुमने मेरे हृदय में स्थान पा लिया था। मेरे दिल ने उसी दिन कहा था कि यह चिड़िया एक दिन तेरे पिंजरे में आवेगी। आज वह सौभाग्य मुझे प्राप्त हो गया। चलो, हम दोनों गिरजा में खुदा का शुक्र करें।

परदा

(जेनी का विशाल भवन। जेनी एक सायेदार वृक्ष के नीचे एक चेयर पर विचार-मग्न बैठी है।)

जेनी—(स्वगत) मन को विद्वानों ने हमेशा चंचल कहा है। लेकिन मैं देखती हूँ कि इससे ज्यादा स्थिर वस्तु संसार में न होगी। कितना प्रयत्न किया कि रजन को भूल जाऊँ; लेकिन जितना ही उससे दूर भागती हूँ उतना फन्दा और कठोर होता है। महीनों से प्यानो पर नहीं बैठी। दिल जैसे मर गया है। वही सूरत आँखों में फिरती है, वही बातें कानों में गूँजती हैं। यहीं रजन से रूपवान् पुरुष पड़े हुए हैं, उनसे कहीं विद्वान्; पर किसी से बोलने की इच्छा नहीं होती। मैं जानती हूँ, मैं जरा भी हिम्मत दिलाऊँ तो वे मुझ पर प्राण देने लगेंगे। कितने आसक्त, लुब्ध नेत्रों से मेरी ओर देखते हैं, किसी से दो-एक बात कर लेती हूँ तो कितने निहाल हो जाते हैं। पर उस देवता के सामने ये सब खिलौने हैं। खिलौने

में रंग है, रूप है, कला है, उस देवता से कहीं ज्यादा ; पर कुछ बात है जो देवता में श्रद्धा और प्रेम उत्पन्न करती है, खिलौने के प्रति केवल विनोद का भाव। वह क्या बात है ! प्यारे रजन ! तुमने मुझ पर क्या जादू कर दिया ?

(मिसेज विलियम आती है।)

मिसेज विलियम—तू यहाँ कब तक बैठी रहेगी जेनी ! अब तो शब-नम पड़ने लगी ?

जेनी—कमरे में तो मेरा दम घुटता है अम्माँ !

मि० विलियम—मैंने बहुत अच्छा पडिंग बनाया है। चल, थोड़ा-सा खा ले। तूने दिन-भर कुछ नहीं लिया। जरा आईने में अपनी सूरत देख। जैसे छः महीने की रोगिनी हो।

जेनी—मेरी अभी कुछ खाने की इच्छा नहीं है मामा ! क्षमा करो। इधर कई दिन से रजन का कोई खत नहीं आया। मेरा दिल धड़क रहा है। कहीं दुश्मनों की तबीयत खराब न हो।

मि० विलियम—जब तेरी तबियत का यह हाल है तो क्यों रजन से विवाह नहीं कर लेती ! वह बेचारा हर तरह राजी है ; पर तुझे न जाने क्या खब्त हो गया है। खुद भी मरती है और उस बेचारे को भी रुलाती है। जब धर्म की और सम्बन्धियों की वह परवा नहीं करता तो उससे क्यों नहीं कहती कि प्रभु मसीह पर ईमान लाये। प्रेम का उद्देश्य जीवन का सुख है, या सारी उम्र रोते रहना ?

जेनी—यही तो मैं भी सोचती हूँ मामा ! क्या हरज था अगर मैं अपनी शुद्धि करा लेती। मुझमें तो कोई तब्दीली हो न जाती, हाँ, उनके समाज को सन्तोष हो जाता। अगर मैं जानती, उनका हृदय इतना कोमल है तो उन्हें छोड़कर न आती। मुझे तो अब अपनी जिद पर पछतावा हो रहा है। धर्म और सिद्धान्त आदमी के लिए हैं। आदमी उनके लिए नहीं है। मामा, मैं तुमसे अपनी विकलता क्या कहूँ। ऐसा मन होता है

के पर होते तो इसी वक्त उड़कर पहुँच जाती और कहती—डार्लिंग, मुझे क्षमा करो। यह तीन महीने मैंने जिस तरह काटे हैं, वह तुमने देखा है; ार मेरे दिल पर जो कुछ गुजरी है वह कौन जान सकता है! एक क्षण के लिए भी उनकी सूरत आँखों से नहीं उतरी। ऐसे प्रेम पर अपना सर्वस्व अर्पण कर देनेवाले प्राणी भी संसार में हैं, यह मैंने उन्हीं को देखा। मुझे स्वर्ग की विभूति मिल रही थी मामा! मैंने समाज के भय से उसे ठुकरा दिया। मैंने समझा था मामा, मेरे चले जाने के बाद भोग-विलास में इनका जी बहल जायगा, फिर किसी युवती से विवाह करके इनका जीवन सुखी हो जायगा। क्या जानती थी, वह मेरे वियोग में अपने को घुला डालेंगे। कल अगर उनका पत्र न आयेगा तो मैं चली जाऊँगी मामा! तब मुझे तुम्हारी बड़ी चिन्ता थी मामा! मैं डरती थी, कहीं मैं उनसे विवाह कर लूं तो तुम जहर न खा लो। अब मैं तुम्हारी ओर से भी निश्चिन्त हूँ।

मि० विलियम—क्या तू समझती है, विलियम से शादी कर लेने से मेरे दिल में तेरी वह मुहब्बत नहीं रही!

जेनी—यह बात नहीं है मामा! कम-से-कम तुम्हारे साथ एक आदमी तो है, जो तुम्हारी रक्षा करता रहेगा।

मि० विलियम—विलियम मेरे पीछे पड़ गया, प्राण दिये देता था, नहीं इस उम्र में मुझे शौहर की हवस नहीं थी।

जेनी—तो मैं तुम्हें कुछ कहती थोड़े ही हूँ मामा! विलियम में अगर दो-एक बुराइयाँ हैं तो हजारों खूबियाँ हैं। मैं तो ज्यों-ज्यों उनका परिचय पाती हूँ, उनके प्रति मेरी श्रद्धा बढ़ती है। वह सचमुच ही तुम्हारे योग्य थे मामा!

(तार का चपरासी तार लाता है। जेनी का रंग उड़ जाता है। काँपते हुए हाथों से लेती है और पढ़ते ही मूर्च्छित होकर गिर पड़ती है—)

Yograj breathed his last with jennys' name on his lips to the last moment.

मि० विलियम—या खुदा, या मेरे परवरदिगार, यह क्या गजब हुआ ! (जेनी के हृदयस्थल पर हाथ रखती है। फिर बदहवास दौड़ी हुई अन्दर जाती है और गुलाबजल लाकर जेनी के मुख पर छिड़कती है। समीप कोई पंखा न होने के कारण उस समाचार-पत्र से हवा करती है जो जेनी ने पढ़कर कुरसी के नीचे रख दिया था। बीच बीच में खुदा का नाम लेती जाती है और इन्तजार-भरी आँखों से फाटक की ओर देखती है कि विलियम आता होगा। एक मिनिट के बाद जेनी सचेत हो जाती है।)

जेनी—मैं बिलकुल अच्छी हूँ मामा, तुम जरा न घबराओ। न जाने कैसा जी हो गया था, जैसे दिल बैठ गया हो। अब बिलकुल अच्छी हूँ। इसका भय तो मुझे पहले से था। जिस वक्त मैं वहाँ से चली उसी वक्त उनकी हालत देखकर मुझे यह शंका हुई थी ; लेकिन मैंने सोचा, मर्द हैं, दस-पाँच दिन में इनका जी बहाल हो जायगा। क्या जानती थी, यह दिन देखना पड़ेगा !

(एक क्षण में उसकी आँखें फिर चंचल हो जाती हैं। हिस्टीरिया की-सी दशा हो जाती है।)

कौन कहता है, वह मर गये ! बिलकुल झूठ है। वह मेरे सामने हैं, मेरी आँखों में हैं, मेरे हृदय में हैं। हाँ, उसी तरह खड़े मुझे प्रेमातुर नेत्रों से देख रहे हैं। जरा उनकी नटखटी तो देखो मामा, परदे की आड़ में छिप-छिपकर मुझे धोखा देते हैं। मुँह धो रखिए, मैं ऐसे धोखों में नहीं आने की।

(यकायक उठकर कमरे की तरफ चलती है। उसकी

माँ भी पीछे-पीछे आती है। जेनी अपनी मेज पर से योगराज का चित्र उठाकर उसे हृदय से लगाती है और उसका चुम्बन लेती है।)

मि० विलियम—जेनी, खुदा के लिए दिल को समझाओ।

जेनी—दिल को समझाकर क्या होगा मामा! अब वह किसके काम का है! फिर जब वह मेरे पास भी हो! वह तो रजन के साथ गया। नहीं मैं इस तरह बैठी रहती! रजन मर जाते और मैं इस तरह बैठी रहती! ऐं! मैं इस तरह बैठी रहती! आँखों से खून निकल पड़ता, मेरी लाश जमीन पर पड़ी होती। लेकिन मैं यहीं बैठी हूँ जैसे मुझे कुछ हुआ ही नहीं है।

(वह तस्वीर को मेज पर रख देती है और योगराज के पत्रों को निकालती है जो एक मखमली केश में रखे हुए हैं।)

मेरी अच्छी मामा, जरा बैठ जाओ, मैं तुम्हें उनके पत्र सुनाऊँ—'मेरी बेवफा जेनी'। मैं उस वक्त उनसे रूठ गई थी कि मुझे बेवफा क्यों कहा, लेकिन अब मालूम हुआ, उन्होंने मुझे खूब पहचान लिया था। बेवफा तो मैं हूँ ही। नहीं, उन्हें वहाँ छोड़कर चली आती। मैं बेवफा हूँ, बेदर्द हूँ, मायाविनी हूँ! हाय! ये गालियाँ कितनी प्यारी लगती हैं। तब मैंने उन्हें डाँट बताई थी। इस आक्षेप को स्वीकार न करती थी। आज रजन के ये शब्द कितने मीठे, कितने मर्मस्पर्शी हैं! अब मुझे कौन बेवफा कहेगा, कौन बेदर्द कहेगा! कौन मायाविनी कहेगा! अब किसके साथ बेवफाई करूँगी? मामा, बताओ, कैसे दिल को समझाऊँ? कैसे इस अभागे को समझाऊँ!

(सिर के बाल नोचती है। मिसेज विलियम उसे छाती से लगाती है।)

मिसेज विलियम—बेटा, जेनी, मेरा कलेजा!

जेनी—मामा, मैं भूल जाती हूँ, उन्हें छोड़कर यहाँ क्या करने आई

थी। बिलकुल याद नहीं आती। बताओ, मैं यहाँ क्या करने आई थी? मैंने क्यों उन्हें कत्ल किया! हाँ, याद आ गया! उनके कुल-मर्यादा और धर्म की रक्षा करने के लिए। अपने धर्म की रक्षा करने के लिए! सोचो इस अनर्थ को! जिनके चरणों पर अपने प्राणों को अर्पित कर देना मेरे जीवन की सबसे बड़ी अभिलाषा थी, उन्हें मैंने इन्हीं हाथों से कत्ल कर दिया। मैंने नहीं, मेरे धर्म ने कत्ल कर दिया। धर्म ने भी नहीं, मेरे अभिमान ने कत्ल किया। लोगों ने यह तरह-तरह के मत बनाकर संसार में कितना विष बोया है, कितनी आग लगाई है, कितना द्वेष फैलाया है! क्या धर्म इसी लिए आया है कि आदमियों की अलग-अलग टोलियाँ बनाकर उनमें भेद-भाव भर दे? ऐसा धर्म लुटेरों का हो सकता है, स्वार्थियों का हो सकता है, मूर्खों का हो सकता है। ईश्वर का नहीं हो सकता।

मिसेज विलियम—बेटा, धर्म खुदा ने न भेजा होता, तो दुनिया अब तक तबाह हो गई होती। आदमी आदमी को खा गया होता। बाइबिल तो खुदा का कलामे पाक है।

जेनी—खुदा के तो सभी कलामे पाक हैं; लेकिन उन पाक कलामों ने संसार का क्या उपकार किया, इंसान की इंसानियत को कितना सुधारा? आज दौलत जिस तरह आदमियों का खून बहा रही है, उसी तरह, उससे ज्यादा बेदर्दी से, धर्म ने आदमियों का खून बहाया है। दौलत कम-से-कम इतनी निर्दय, इतनी कठोर नहीं होती! दौलत वही कर रही है जिसकी उससे आशा थी, लेकिन धर्म तो प्रेम का संदेश लेकर आता है और काटता है आदमियों का गला। वह मनुष्य के बीच ऐसी दीवार खड़ी कर देता है जिसे पार नहीं किया जा सकता। आखिर संपूर्ण जगत् की एक ही आत्मा तो है! धर्म का यह भेद क्या आत्मा की एकता को मिटा सकता है? वह खुदा जो एक-एक अणु में मौजूद है, उसे हम गिरजे और मसजिद और मन्दिर में बन्द कर देते हैं और एक दूसरे को काफिर और म्लेच्छ कहते हैं। पूछो, उस विश्वात्मा को तुम्हारे इन झगड़ों से क्या मतलब? उसे इसकी

क्या परवा कि तुम गिरजे में जाते हो या मसजिद में। वह तो केवल इतना देखता है कि तुम प्रेम से रहते हो या नहीं। उसके मुक्त प्रवाह में जो कोई भी मेंड़ें बाँधेगा, वह प्रकृति के नियम को तोड़ेगा और उसे इसकी सजा जरूर मिलेगी। हम आये-दिन वह सजा पा रहे हैं, फिर भी हमारी आँखें नहीं खुलतीं। आदमी की शक्ति है कि उस जगदात्मा को टुकड़ों में बाँट सके! उस व्यापक चेतना को! कभी नहीं। यह तो कोई धर्म नहीं।

मिसेज विलियम—खुदा ने तो केवल हमारे नबी को भेजा था।

जेनी—खुदा ने किसी नबी को भी नहीं भेजा मामा! हमारे जितने धर्म हैं, सभी बिगड़े हुए समाज को सुधारने की तदबीरें हैं; लेकिन धर्मों पर खुदा की कुछ ऐसी मार है कि वह आते तो हैं सुधार के लिए; लेकिन उलटे और बिगाड़ कर जाते हैं। यह वही पुराने जमाने की गिरोहबंदी है, जब गुफाओं में बसनेवाला आदमी हिंसक पशुओं या अपनी ही जाति की दूसरी टोलियों से अपनी रक्षा करने के लिए गिरोह बनाकर रहता था। नबी आये, वली आये, अवतार हुए, खुदा खुद आया, बार-बार आया। नतीजा क्या हुआ? लड़ाई और कत्ल! रंग का भेद, नस्ल का भेद, इन सब भेदों को मिटाने का ठीका लिया था धर्म ने; लेकिन वह स्वयं भेद का कारण बन गया, ऐसे भेद का, जो सब भेदों से कठोर है। मैं तुम्हारी लड़की हूँ, मुझे तुमने अपने प्राणों का रक्त पिलाकर पाला है। मैं जानती हूँ, तुम्हें संसार में मुझसे प्यारी कोई वस्तु नहीं है; लेकिन आज मैं गिरजे में न जाकर मसजिद में प्रार्थना करने जाऊँ तो तुम मेरी सूरत से नफरत करोगी। संभव है, अपने हाथों से मेरी हत्या कर डालो। मैं भी वही हूँ, तुम भी वही हो, फिर यह द्वेष कहाँ से आ गया? मैं कहती हूँ, यह धर्म का प्रसाद है, जिसने हमारे मन को संकीर्ण बना डाला है।

मिसेज विलियम—तू मुझे इतनी धर्मान्ध समझती है बेटी! मुझे अफसोस जरूर होगा, मैं खुदा से तेरी मुक्ति के लिए दुआ करूँगी; लेकिन तेरा अहित नहीं कर सकती, कभी नहीं।

(जेनी माँ के गले लिपटकर उसका चुम्बन लेती है।)

जेनी—मामा, खुदा तुझे जन्नत में जगह दे, तुमने मेरे हृदय का बोझ उतार दिया। अब मुझे कोई शंका नहीं, कोई बाधा नहीं। आज मैं इन सारे ढकोसलों को, इन सारे बनावटी बन्धनों को, प्रेम की वेदी पर अर्पण करती हूँ। यही ईश्वर का धर्म है। धन का धर्म, विद्या का धर्म, राष्ट्र का धर्म संघर्ष हो सकता है। खुदा का धर्म प्रेम है और मैं इसी धर्म को स्वीकार करती हूँ। शेष धोखा है। आप फौरन मोटर मँगवाइए। गाड़ी तो दो बजे रात को जायगी। मैं उसका इन्तजार नहीं कर सकती। मोटर से जाऊँगी। सवेरे तक पहुँच जाऊँगी। वहीं प्रभात के शुभ-मुहूर्त में रज्जन से मेरा विवाह होगा, बड़ी धूम-धाम के साथ, हवन-कुंड की परिक्रमा करके, श्लोक और मन्त्र पढ़कर। मेरे लिए आलटर और हवन कुण्ड में कोई अन्तर नहीं रहा। मुझे शक्ति दो ईश्वर! कि आजीवन इस व्रत को निभा सकूँ। परम पिता! मुझे बल दो, धैर्य दो और बुद्धि दो।

उपन्यास

१—कर्मभूमि ५)
२—कायाकल्प ५)
३—ग़बन ४)
४—गोदान ६)
५—गोदान (संक्षिप्त) ४)
६—निर्मला २॥)
७—प्रतिज्ञा २)
८—प्रेमाश्रम ६)
९—वरदान २)
१०—रंगभूमि, दो भाग ८)
११—सेवासदन ४॥)
१२—सुखदास ॥।)

कहानियाँ

१—अग्निसमाधि १॥)
२—कफ़न २)
३—कुत्ते की कहानी ॥।)
४—जङ्गल की कहानियाँ ।=)
५—नवनिधि १॥)
६—ग्रामजीवन की कहानियाँ २)
७—नारीजीवन की कहानियाँ १॥)
८—पाँच फूल १)
९—प्रेरणा १॥)
१०—प्रेमतीर्थ १॥)
११—प्रेमपीयूष १॥)
१२—प्रेमप्रमोद १॥)
१३—प्रेमप्रतिमा २)
१४—प्रेमद्वादशी १)
१५—प्रेमप्रसून २)
१६—प्रेमपञ्चीसी ३॥)
१७—प्रेमपूर्णिमा ३)
१८—प्रेमचतुर्थी ॥=)
१९ मनमोदक १)
२०—मानसरोवर, ६ भाग
प्रत्येक भाग ३)
२१—समरयात्रा १॥)
२२—सप्तसरोज ॥।)
२३—सप्तसुमन ॥।)

नाटक

१—कर्बला २)
२—प्रेम की वेदी ॥।)
३—संग्राम २)

विविध

१—कलम, तलवार और त्याग २)
२—दुर्गादास ॥।)
३—महात्मा शेखसादी ॥=)
४—रामचर्चा २)
५—कुछ विचार (निबन्ध) २)
६—प्रेमचन्द घर में ५)
१—अवतार ॥)
२—अहंकार २)
३—आजाद कथा ८)
४—गल्प-रत्न १)
५—गल्प-समुच्चय २॥)